No. ३९८ ख

Title [illegible]

Author [illegible]

Extent २ [illegible] Age [illegible]

Subject धर्मशास्त्र

सा० नाटिकी

ता० ८ ध प म प सा नि ध प म ग रे सा रे प ध म ग रे प म
अथ रागनीजी० ॥ श्री काली मन्त्र पालिम सीस हृदश वर्ण जाल श्रात पाल योगि निस मनर कपाल
ग रे म प रे सा ध रे सा रे रे रे ग रे रे रे सा नि ० ध प म ग रे प ध प
धारै ॥ स्था० ॥ दशवदनी पाद पाणि दश दश भुज धारि रिण मिन अमित जगत व्याप रही नी
म ग रे ध प म प रे सा नि ध प म ग रे सा रे प ध म ग रे प म
दरूप चारै ॥ अं० ॥ शंख चक्र खड्ग बाण गदा परि घ शूल चाप शिर भुशुंडि तीन नयन भूषि
ग रे म प रे सा ध रे सा रे रे ग रे रे सा नि ध प म ग रे प ध प ध प म ग
तांगि सारैं ॥ मधु कैटभ नाश करणि परमेष्ठी भीति हरणि बाल निधीर छुकरण चाहरण
म ग रे ता० ८ ध सा ग रे ग म प ध प म ग रे ग रे सा ध
शरण मारै ॥ अथान्य छन्दजी० ॥ कालिंदी परम नदी रवि तनया श्याम नीर पीर हरे पावन
— ग म ग रे सा म प ध नि रे सा रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा रे ध
की भीर दूर करणी० ॥ स्था० ॥ कृष्णचंद्र वाम अंग प्रकट भई ग्वालोक पावन कर भूमि वहि
ग म ग रे सा ध सा ग रे ग म प ध प म ग रे ग रे सा ध सा ग ग
यन विभीति हरणी ॥ अं० ॥ वृंदावन निकट वहत भाग्य युक्त स्नान करत शुद्ध देह धार दिव्य
म ग रे सा म प ध नि रे सा ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा ध
गतीनाम सकुरणी० ॥ मोहन पटराणि द्विज बाल बुद्धि दानी श्री कृष्ण केलि धानी सुख विवि

१५

अथ नाटिकी रागिनी

ता०८ सा रे प । ध प रे ग ध प म ग । रे सा ध प ग रे ग । प ध प ग म ग

ध्रु० प० अ० ॥ विश्वंभर विश्वकारण हरण जगत विविध मान परम हंस साधि दित पग कंज राग

रे सा । प ध नि रे सा नि रे सा रे ग रे म रे ग नि रे सा नि ध प ध प रे ग ध प म ग रे सा ध ग

भारी ॥ स्था० ॥ जांके हित विहत वास विपन कठिन तपत नाय जग जग सा जराय त्याग रहें म

म ग रे सा सा रे प ध प रे ग ध प म ग रे सा ध प ग रे ग प ध प ग म ग

स चारी ॥ अं० ॥ वर्षा जल शिर गहें सहें शिशिर जल निमग्न रहें घर्म तपैं पां चअग्न लवपन म

रे सा प ध नि रे सा नि सा रे रे ग म रे ग रे रे सा ध ध प रे ग ध प म ग रे सा

ध धारी ॥ मन इंद्रिय सोक ओक भोगन के त्याग राग नत स्वरूप वालगति धीनु वगहें न्चिहू तासी ॥

ग रे ग म प ध नि सा नि ध प म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे

अथान्यत्र ॥ सो इ परम पुरुष जा सध्यान धुरैं योगिराज अपर का जत्याग जेंग्र अनवर

ग रे सा ध प म प ध नि रे सा रे ग रे सा नि ध प म ग रे ध प म ग

त चारैं ॥ स्था० ॥ पद्मासन धार हस्त गोद में सुधार सार प्राण अपान कर सम आन उर्द्ध च

रे सा ग रे ग म प ध नि रे सा नि ध प म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे ग

ढ़सारैं ॥ अं० ॥ आसा बुज कर निवास वास ग्राम त्याग सकल विकल रूप हाय निज गहें तत्त्व रू

रे सा ध प म प ध नि रे सा रे ग रे सा नि ध प म ग रे प ध प म ग म ग रे सा

प धारैं ॥ युक्त शायन खान पान सम विहार युक्त धरैं शम दमादि वाल निधी नियम यम प्रकारैं ॥

सर्वपापहीनहोत. वासनयुत ऊत भ्रांत अचलऊत उत्पत्तिये प्रकट करण पिछु: अं
लेतप्रहय २ सामीपक. एकलोक एकरूप सोऽ्म पुनअभेद, भेद चारि ईप्सित पद जिछुलि
२ दीनवंधुभक्त वत्सलचरण कमल विमल हियेवालनिधी ध्यानधरे दर्शह
रिकरिछु: ॥ अथध्यान्यत्. मकराकृतकुंडल मध्य सुखमशोभमुखहिंधरे
हाटकको मुकुट मकुटि चंदन खोरचंदनधारी स्या पीतवस्त्र न हेमरशन
श्रोणि दशधामरहो भारभूमिहरणचतुर भक्तपीरहारी. अं. गरुड अंस चस्यो
जात भात सुंदिर श्याम वर्ण ध्वजा वैनतेय धारि हरि पापहारी. शंखगदाकंज
चक्र वक्र वक्रअसुर हनन करण सारि शस्त्र धरकै रे कार्य भारी. अथशिव:
अतिविरूपकाल्दह ज्वलनाशिखाजटाधरे विपति वसननिरत करे म्हल
अंसधरे. स्या. भस्मधारि मुंडमालि भालते त्रकर उजारि जारि देतविस्वत

दि॥

अथ शक्ति के: विश्व मायाशक्ति हि अबलनि बल देव पूज करै हरै बुद्धि शुद्धि सकल
विकल करण सारी ॥ स्या ॥ परमेष्ठी वत्स हरे रेइ मेघवर्ष करे जसमति शिशु बंधक
स्यो धरयो उखल भारी ॥ अं ॥ दुर्वासा भ्रांति धारि दर्शन हित ब्रज हिं गयो यमुनातट प्रकट बाल
केलि कला धारी ॥ पंकति प्यो व ककेरा नंद तन यना हि ई श्र ~~मसाक रूप~~ मत फिर्यो मायाविस्तारी
विहसभ्रारगो दमशकरूप करैकारी ॥ मुखब्रतिष्ट अलपदु वेजनन मरण देव देव अलदुत
अमित फिर्यो परम भीति कारी ॥ पमीपर मेश्वरि के चरण कंज मंजु वाल माल धार ~~मार~~
~~केसरी~~ नमन करै जगत मोहकारी ॥ अथान्यत ॥ जगत करण भार धार चित्र कार्य
करिणी॥ भरिणी हरिणी धारिणी धरणी ॥ विश्वरूप चरणी ॥ स्या ॥ नानाविध
रूप रंग भिन्न ढंग ~~जंग करै~~ जीव विविध ~~सेकल शुक्र~~ पीत रक्त सेत
कर्म करै ~~मोहधार सत्व मिनै पुनि भलन करणी~~ अं ॥ कहत अलि सरत रहे जब
ज्ञान मति इत सत्व वे सिमलि करिणी

अथरागिनी केदारी॰ ध्रुवपद॰ अस्ता॰ कल्पकाल जागित्यागि सकल
विकलमन तरंग अंगशोधरोधप्राणघोष सुनत ज्ञानी ॰ स्था॰ नियमयम
६८२ मुद्रासन प्राणयमन प्रतिप्रतिसुहरण ध्यान युक्त धारणादिसहसमाधिठानी अं॰
सु इक अलख रूप रहे वहे जगत प्रलय जबी सत्य नित्य शुद्धबुद्ध निर्गुण [illegible] नमानी
ध्यानी नव येहि कला विकल जगत लीन भयो बालनिधी एक एकप्रतिहित सुखद ज्ञानी
अथान्तर॰ योग आष्ट योग [illegible] राजता सयोग युक्त रहें कहें सदा अल
ख अलख कर्म योग धारें स्था॰ धौति नेति वस्ति [illegible] अवर त्राटिकयुत
नौलिकादि गांपिभाति येहि षट्क कर्मयोग मारें अं॰ धारें पुन परम
जोत सोई उक निसलोक संतजनन नमन करे बालानिधी बुद्धि मम सुधारें ॰
निज मारग ज्ञान ध्यान करणा कर पर ब्रह्म परमधाम रूप मये लहें सुख अपारें

पपत्र २

निरेसां सांरेगमं पमगरेसां ॥ अंतरा. सांसां निधनि धपम

गरे रेरे गग मम पप धध निनि सांरेगरे सांनिधपमगरे

धनिरेसा० सारेगमपमगरेसा० ॥ अथ पगततिकार. डिड़ डा डिड़

डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा स्था. डिड़

डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा

अथालापः

न जा

गरिज्ञा हृहासकारे॰ अं॰ दृष्टि मुष्ट भगाए भगाग्न भाजरत पतित होत लीन होत देव कुंज
गुंजगाजउचारे॰ फूलनीत अंत धरे भीवण मुख दंशु भरे धरे धीरवालनि थै अरिनउर सफारे
अथान्यत॰ हर गंगाधरणाभरण इंदु किरण शिखर करण सरणागत दुःख हरण चरणजा
सजगरे॰ स्था॰ दशकंधार शिव मंदिर वैठि कठिन मृत पतप्या विंशति भुज अवलकी ये
रायलंक नगरे॰ अं॰ वाण हुरशंभु भक्त सक देखलेख नपत जगात ना पापावति से लेश
हेर सगरे॰ तो बाणरित न तपकी नवाण गुरअति अवीन सहस भुजादीनति सकल संगजरे
अथ सूर्य॰ सूर्य शरणाधार भार हरि पापवतीन कालवंदन कर प्रात मध्य
सायंतनि संध्या॰ स्था॰ भानुतेज मन नाहिं धरो वराहिं सकल दूर करो व
[illegible] द्विषुहि वेर करे हटे बुद्धि निंद्यो॰ अं॰ याहि तेज धारणते त्राण होत जगत माहज
गायन ~~[illegible] जोत देख~~
कों अरसहित ~~अथिति~~ ति तनय देत वंध्या॰ दश परेव दश देव हर्ष होत वालनिधे

केरवुद्धि विशद उरसु चरणकंज वंद्यो । अन्यत् । परमजोत दिवामणि रक्षक
ज विकच वदन कुंद रदन मंदन हस नपीत वसन धारी । स्था । चारी जग सद
२ रहित विहित अभातिम रहरनि शरणागत रक्षकरणि धरणिदेव कारी । अं । जांके भौरी
रचवादन की धुनहि सुनत मध्य दिवस अपहि वेद पाठ पठन पाठन को सारी
३ नूतन निज शाखकरी माध्यंदिनि नाम जास यजुर्वेद विशाल निधी नमो वदउ चारी
अथावतार । निराकार भक्त वक्तल अनुर धीर भीर देव भेष धरै विविध भांत
करे कार्य्य सगरे । स्था । मत्स्य रूप धरि सत्यव्रत आपत रयो धरयो पीठ कमठ मोह हरयो
शिखरि रदन धरयो जगरे । अं । खंभ फारि रक्षकरी प्रह्लाद वाल भक्त वामन पग पाव
न जग भार हरयो भगुरे । दशकंधर हनन कारि राम पगपधारि भये सुबल बुद्ध
कल्कि वाल हरे भार नगरे । इति केदारी । ध्रुवपदानि । २३

अन्ताईतस्वांग

ता०८

रागली देवगिरी॰

सा गरे ग म ग रे सा नि ध नि सा नि ध प नि सा ग

अथ भ्र॰ जीके॥ परमे श्वर जगदीश्वर चिदानंद अगम निगम नेति नेति त्याग

प ग रे ग प गरे सा प ध नि रेसा रेरे रेसा — नि रेसा रेरे रेग रेरे रेसा नि ध प ग

अतन तत्व रूप धारी॥स्था॰॥सर्व व्यापि पुन अहृश्य कथन कउ करन सके वो तेक

रे ग म ध प ग रे ग म गरे सा नि सा ग प ध प प धनि नि सा ध प ग रे

उ स्तवन करे चेतन चित चारी॥अं॰॥उपमा काउ कैसे कहे पवन वहे देह बुहे स्पर्श

ग म गरे सा सा ग पधप — प ध निरे सा रेरेरे सा रेसा रेरे रेग मरे ग रेरे सा ध प

रहित सर्वे व्यापि नभहि शून्य सारी॥तेज ताप देह करे कोति मजग तारि भरे अलप

ग रे ग प ध निरे सा निध ग रे रे सा ता०८ सा रे ग म ग रे सा नि ध नि सा नि ध

रूप वालनिधी तुवहि कला भारी॥अथान्य र॰ भ्र॰॥ योगी श्वर योग गम्य योग विना नाहि

प नि सा ग रे ग प ग रे ग म गरे सा प ध नि रेसा रेरे रेसा नि सा गरे नि ग रे सा

मिले सर्व न्याल योग विना नाहि सिद्धि धारी॥स्था॰॥चारों जग न्याल कीयो कर्म धर्म त्यागदी

निध प ग रे ग प ग रे ग म गरे सा सा ग प ध प प ध नि रे सा नि

यो तुवहि योग नाहि कीयो उभय भय भारी॥अं॰॥न्याल योग युक्त संत तुवहि गती पाइ

ध प ग रे ग म ग रे — सा ग म प ध प प ध नि रेसा रेरे रेसा रेसा रेरे रेग म गरेरे सा नि

के त माया छल लोभ हीन साधु वृत्ति चारी॥वालनिधी परम पुरुष संगति कर ज्ञानपा

ध प ग रे ग प ग रे ग म गरे सा ता०८ सा रेग म ग रे सा नि ध नि

य धाइ होइ एक रूप हटे भ्रांति सारी॥अथ शान्ति॰के॥हरि माया मोह करलिए भरलिए ज

देवगीरी रागनी

पृथिवी धर राय भाय राय गज धाइ मरें धरें भूमि स्वर्ण अहूदय करी वहुर धर्दिणी ॥ अं ॥

सेना मम प्रवल रही वीत करी ऊंट वहीं धोके भाक काउन मरे अरि नगर न मन्दरणी ॥

जगत सकल भूपन बल चूर धूर छिन हिं करों धरों भूमि अखिल वालवै तिमूलि मरणी ॥

अथाध्वजतिः ॥ श्रीशान्ति सकल जगत कर्म धर्म धार रही जात विना विद्व जन मूकस

भासाधें ॥ स्था ॥ रमानाथ वाणि नाथ उमानाथ सकल देव सुश्री कर युक्त सुहजनोस

विनाआधें ॥ अं ॥ इंद्रासें मंदिर हरि कंरण होत अर्चन युत सरहि सरस रूप धूप युते

हर्ष साधें ॥ जेते जग राज काज रमा विना अनहि सुछ वाल विप्र चरण चारणा छ सन अराधें ॥

अथ श्रीगणपते ॥ ढुंढि राज काज करण हरण विघ्न सघन जनन मनन करहि नमन

करें जो पुरवराती ॥ स्था ॥ कुंड दंड मंडित मुख सुखद पिजनि पाउं परी पीतवसनकटि

अथ दरबारी कानडा० रत्नाकर मतानुसार येह राग मेघरागका पुत्र है ये
अर वर्षा ऋतु है अर शर्वयाम रात्रिमें इसका समय है ये अर संपूर्ण है ये अर
गंधार इसका अंश स्वर है अर सुरभि देवता. अर सोम ऋषिः है अर दं बीज
है ~~कृष्ण~~ नायिका है मुग्धा नायिका है शृंगार रस है. अथ प्रकीर्ण विधिः गौराख्या का
नडा यत्र षेडि संज्ञेन निश्रितः दरबारीति विख्याता रागो गातुं प्रयुज्यते गंधारांश
ग्रह न्यासा दरबारी ~~कानडा~~ इति कथ्यते० अथ प्रयोग साधनम् ओं अस्य श्रीदरबारी
रागस्य सुरभि देवता सोम ऋषि त्रिष्टुप् छंदः दं बीजं अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे
विनियोगः दं अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि. अथ ध्यानम् अत्नीकार मर
मात देह सुभगो रत्नान्वित कर्णकने करयोर्यस्य सुपीतवस्त्रयुक्तो हृदये च मुक्तावलिः
नानापुष्पसुवासवासिततनुः संगीत विद्यारतः रामा गौर कपोल चुंबन पटुः
हास्यान्वितः कानडा ॥ पूजनं कुर्यात् अथ मंत्रः दं दरबार्यै नमः ओं धं धेनवे
नमः जप संख्या.   ॥ अथ षाडव क्रमः षड्ज सम ऋषभ चढा

अंश

कोमल

गंधार उतरा॰ मध्यम उतरा पंचम सम धैवत उतरा निषाद उतरा॰ अथ
सरिगम: मप निसरेगरे रेरे सस निनि सस धधप मपधनि स धनिस
स॰ स्थायी॰ सग मप धध निनिस निनिसां गंरें स निधपमपधनि स
निधपमगरे॰ स॰। अथ गत सितार की मसीतखानी डिड़ डा डिड़
डाड़ा डाडाड़ा। डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा। डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा।
डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा अस्थाई॥ डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा। डिड़ डा डिड़
डाड़ा डाडाड़ा। डिड़ डा डिड़ डाड़ा डा डा ड़ा। डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा।
डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडाड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डाड़ा
डाडाड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥ डिड़ डा
डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डाडा ड़ा॥ डिड़ डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा॥

रा. नारिकी

ता. ४ ध प म ग रे ग म ग रे सा ध प म ध नि सा ग रे म प म ग

श्रीगणपतये ।। विघ्नराजकाज विविध साधन हित आदि न मो पुनहि काज ध्यान धरो सिद्धि पाउ

रे सा ध प म ग प ध नि रे सा रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग म प म

नगरी ।। अ ।। सिंधुर मुख गोधि चारु चतुर देव सदन मध्य अंगुउदंड मुंडिम मुख विमुख चूर

ग रे सा ध प म ग रे ग म ग रे सा ध प म प नि सा ग रे ग म

नगरी ।। अं ।। जाको जग विगत पाप पूजे नित कार्य हेत ऋद्धि सिद्धि देत गति हू जिहू नि

ग रे सा ध प म प म ग प ध नि रे सा रे ग रे रे सा नि ध प म ग म प म ग

चैज गरी ।। तांको व्रत धारण तें कृष्ण चंद्र विपति हटी घटी निंद मणि जहु यात पतन सभा

रे सा ता. ४ ग रे ग म प ध प म ग रे सा ग रे सा ध

चघरी ।। अघ धान्यत गणेश ।। कोमल करि वदन रदन एक युक्त मुक्ता करैं दुःख हरै

नि सा ग म प म ग रे सा ग म प ध नि रे सा रे रे सा नि ध प म

जगत विगत पाप करै जनकों ।। स्था ।। तन मन धन अर्पण कर गौरि तात ध्यान ला

ग रे सा ध नि सा ग म प ग रे सा ग रे ग म प ध प म ग रे सा ध

त मंत्र वर्ण लक्ष जपे सिद्धि होइ मनकों ।। अं ।। प्रणव आदि गं गणेश अंत जा सन मोक

नि सा ग रे ग प ध प म ग म ग रे सा ग म प ध नि रे सा रे रे सा नि

हे मन इच्छित फल सुधारे स्वामि होइ धनकों ।। विघन नाश आदि न घात मांत मोत सु

ध प म ग रे सा ध नि सा ग म ग रे सा

सुदिखात वालीबी करै वालिकै उमुदिनकौं ।।

राग-नाट॰ ता॰ ८ १८

प म ग रे ग प ध प म ग रे सा ध प म ग रे ग म

श्री विष्णु जी के ॥ पापपुंजनाशनपटु रमानाथ कपट त्याग अर्चै जज पुरुष प्रवर धन्य ज

ग रे सा ग म प ध नि सा रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा ध प म ग

२ गन साधे ॥ स्था॰ ॥ यद्यपि कउ विषय परयो पराधीन भक्ति युक्त सदा सन्त हरि सु भजन सो

म ग रे सा प म ग रे ग प ध प म ग रे सा ध प

रज्ञान साधे ॥ अं॰ ॥ ऐसे करुणाकर सुखदायिक कों सदा भजो न जो दंभ कूट मान अभिमा

म ग रे सा ग म प ध नि रे सा रे ग रे सा नि ध प म रे सा ध प म ग म प ध प म

न द्रव्य साधे ॥ श्रवन मनन कीर्तन स्मृति पादसेव अर्चन नुति दास्य सख्य आत्म सकल अ

ग रे सा ता॰ ८ ध प रे ग म प ग रे सा नि ध नि सा ग म प ध प म

र्पि हो अबाधे ॥ ध्यान्यद्वि॰ ॥ मदन कोटि मान हरण आनन जिह परम सु मग अभग मत

ग रे सा ध ग म ग रे सा म ग म प ध नि रे सा रे ग रे म रे ग रे रे रे सा नि ध

भाग्य भजन भाजन हरि देवा ॥ स्था ॥ परम रसिक रस हिं लेत विष्णु पदन गाय गाय

प म ग रे सा ध ग म ग रे सा ध प रे ग म प ग रे सा रे नि ध नि सा ग

ध्यान साय स्वरानंद स्वांत नै ह स मेवा ॥ अं॰ ॥ हरि चेतन व्यापर हो जीव विविध जगत मां

म प ध प म ग रे सा ध ग म ग रे सा म ग म प ध नि रे सा रे ग रे म रे ग रे रे सा नि ध

ह जग आनमोद मुदित वदन आशु सिद्धि धेवा ॥ चरित चरित चित्र चित्र कार्य कियेमन्त्र है

त्रिशूलदंडमंडितं सितांबुगांगशेखरं सुयोगभेषचारकं ~~विनासमासकं~~ सुरामपादकांबुजे ।
सुसेविनं सदामुदा नमामि भक्तपालनं सुरुत्रिवारुसंविभुं स्वयंभुमालजं धारिणं भुजे
ग्रपाग्यत् । यक्षा । निरतकरत तांडव शिव परम मोदकारी दिगंबरी धारी शिर गंग
चंद ग्रर भुजंग भारी । स्था । हावभाव विविध भांत गत हिलैतैनी किनीकि थेतत्रा
थेथे तात् सम ~~किंग्र लल~~ धारी । डमरु कीडुमक ताथरा थकीयो नादसकल [redacted] विक
हिंविषम
लता पहारी जग परम मोदकारी । एहेउपकारी के चरण कमल बालनिधी विधी पूर्वक
नमन करै धरै धीर तारी । अथ रवि: ॥ पद ॥ सर्व तो लैर जया जग सकल वडाई । जिंहवि
नजीव जगत में सगरे रैन शयन जडता तम छाई । यद्यपि जागि रहे कउ पुरुष नारि विषय
विषधर [redacted] ताई । रवि प्रताप जग होइ प्रकट जब त्याग मंद मति हरिपद गाई ।
सत्य प्रभ धर्म करम करनी के प्रकट देवको दर्शन पाई । बालनिधी रवि पाद नमन
करधरै धीरमन ग्रति हर्षाई ० ॥ ग्रन्यत् । ता । तीन ग्रर्हण वर्ण ग्रतिसुं

दरभानु परमप्रकाश पुंज जग मगरे १ स्था० योजन लक्ष दूर भूमीतें बसे लोकहितकारी रे

वारिद किरण लेत जलक्रम तें बिसरो देत लक्षगुणों जगरे २ अं० नर नारी सब जीव जंतु पशु मो

द धरैं सुखसारी रे प्राणरूप जल बर्षा जग में अन्नादिक वन मगरे ३ ये सो परमं हौं हे

२ दया गुण सागर आत्मरूप जग व्याप्यो रे चरण शरण रक्त वाल निधी दिन दीजो

३ दान स्था निज भुजगरे ४ अथ दशावतार० धा करि रूप धारि वरे मनु अंजलि मांफ

वही नाव तारि प्रलय अब्धि मकर रक्षकारी० स्था० कमठ सुमथ पशि सिखि विधस्यो

जगति वंध कोड दरस्यो फाड खंभ नरहरि हन्यो हिमकशिपु भारी० अं० वामन जग पावन

हित सरित गंग भूमि सरी परहिं परशु भार हरस्यो राम सेतु चारी० सेनागण साथ तिये

रावणके सीस छिदे सुबल बुद्ध वाल निधी कल्कि भार हारी।

अथ नायिकारागिनी ध्रुवपद अस्त विश्वंभर विश्वकरण हरण

जगत विविध भांत परम हँस ख्यादि तपगर्कं जराग भारी ॰ जांके हित विहत

वास विपन कठिन तपत ताप जगत राज राय त्याग रहें ब्रह्मचारी ॰ ग्रं

वर्षा जल शिर हिं सहें शिशिर जल नि मग्न रहे घर्म तिवें पांच अनल

अन पवन अहार धारी ॰ मन इंद्रिय रोक ओक भोगन के त्याग राग तत्स्वरू

प काल निधी तु वाहिं चिह्न सारी ॰ अथ ध्यान तं सोर परम प्रभु

जास ध्यान धरें योगि राज अपर काज त्याग जगत अतविरक्त चारें स्वा

सार पद्मासन धार हल गोद में सुधार प्राण अपान क केर समान ऊर्द्ध

चक्र सारें ॰ ग्रं ॰ आज्ञा बुजकर निवास वासना सत्याग संकल विकल

रूप ह्वाय निज हित तत्व व धारें ० भक्त शयन खान पान सम विहार भक्त धरें शम

दमादि वाल निधी नियम यम प्रकारें ० अथ श्लोक ० भु ० श्री काली भक्त पालि

मसी सहस्र वर्ण जास भास पात योगनि सम नरक पाल धारें ० स्वा ०

२ दश वदनी पाद पाणि दश दश भुज धारिणी नितत्र नेत जगत व्याप रहीं नीद

रूप चारें ० अं ० शंख चक्र खड्ग बाण गदा परिघ शूल चाप शिर भुशुंडि



तीन नयन भूषित अंग सारें ० मधुकैटभ नाश करणि परमेष्ठी भीति

हरणि वाल निधी रक्षकरणं चरण शरण भोरें ० ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॥

कालिंदी परम नदी रवितनया श्याम नीर पीर हुं पापन की भीर हर करणी ० स्वा ०

कृष्णचंद्र वाम अंग रास क्रकट भई गाव लोक पावन कर भूमि वहीं यम विभीति हरिणी ० अं ०

वृंदावन निकट वहत भाग्य पुरु स्नान करत शुद्ध देह धार दिव्य गतीन सवरिणी ०

मोहन पटराणी हिज वाल बुद्धि दानी श्री कल्लके लिखानी सख विविध भांत धरिणी ०

अथ गणेश० धु० विघ्नराज काज विविध साधन हित आदि निमो पुनहि काज थपा
न धरो सिद्धि पाव सगरी ० थपा० सिंधुर मुत गोपि चारु चतुर देव सदन मध्य
भुंड दंड मंडित मुख विमुख चूर नगरी ० अं० जाको जग विगत पाप पूजे नित कार्य
हेत आ ऋद्धि सिद्धि देत तिहू जिह निवे जगरी ० ताको व्रत धारस तें लम्बचंद्र विपति
हटी घटी निंद मग जह्यात वनसमाच घरी० अथ न्पत ० कोमल करि
वदन रदन वक्र युक्त मुक्त करे दुःख हरे जगत विगत पाव करे जनन को थपा०
तन मन धन अर्पण करगौरितात ध्यान लात मंत्र वर्ण लनत जपे सिद्धि होए मनको
ब्रण व आदि गंगणेश अंत जास नमो कहे मन इप्सित फल सुधारि स्वामि
हेरे धनको ० विघ्न नाश अरिन घात भांत भांत सुख दिखात काल
निधी ~~चरण पुरस~~ स्मरण करे चात्रिक जिमु घनको ॥ अथ विष्णु॥

रमानाथ

पापपुंजनाशनपटुकपटत्यागकामअर्चैजउपुरुषप्रवरधन्यजगतमाथे॰ स्या॰ यद्यपि

१स्यो पराधीन

कउविषयअलखअलापाभक्तियुक्तसदासक्तहरिसुभजनसोरज्ञानसाधे अं॰ ऐसेक

क॰ २ रुणाकरसुखदायिकोंसदाभजोतजोदंभकूटमानअसत[redacted]दुव्यराधे॰ श्रवनमनन

२ कीर्तनस्मृतिपादसेवअर्चननुतिदास्यसख्य[redacted]आत्मसकलअर्पिहिअवाधे॰

अथान्यत्॰ मदनकोटिमानहरणआननजिंहवरनसुभग अभंगभाग्यकरन

भजनैद ५ भजनहरिदेवा॰ स्या॰ परमरसिकरसहिलेतविलुपदनगायगायध्यानलायस्व

रानंदस्वांतनेहसमेवा॰ अं॰ हरिचेतनव्यापरहेजीवविविधजगतमांहजनान

वेदन ८ मोदमुदितंआशुतिद्धिधेवा॰ चरितचरितचित्रचित्रकार्यकियभक्तहितवालति

धैंरसहिदेतसोरअलभमेवा॰ अथशिवस्य॰ दादरा॰ सदाशिवंशिवायुतं

नमामिकामसाधकं जटाधरंाथकांतकं कृतांतभंजनंभजे ॰स्या॰ विभूति

देहधारकं गलेहिरुंडमालकं हिमांशुभुश्रभालकं गणेशपालकंयजे अं॰

मा

धरश्चापधरः प्रवीणः छायाश्रयः पद्मविशालनेत्रः कंदर्पकांतः
सचरामरागः ॥ अथ श्लो ६ ॥ अथ कुंतलरागः श्रुतिंधरो वेणुधरः
सतालः पीतांबरः चंपकपुष्पमालः पश्चात्स्थसखिवीज्यमानो
गौरः शुचिः कुंतलनामरागः ॥ अथ ७० ॥ अथ कालिंगरः पूर्वोक्तः
अथ वकुलरागः नागवल्लीदलं हस्ते कंठकर्णे च दधत् भूषणं
स्वर्णजं गौरः वकुलः श्वेतवस्त्रं धृक् ॥ अथ ८ ॥ अथ चंपकरागः
पद्मपाणिश्च पद्माक्षः पद्मवक्त्रः करीदिवान् श्वेतपीतांबरोद्
दाराया श्यांतो हि चंपकः अथ हिमालः कथ्यते मृदुवाणीं सर्वदा
कोकिलवन् मधुरकण्ठललायः पक्वपर्णानि भुंक्ते धवलवसन
धारी दाडिमीबीजदन्तो हसन्तः सखिसमेतो हंत हेमालरागः ॥

धा· २

अथ श्रीरागपुत्राणि सिंधुराग पूर्वोक्तः मालकापि पूर्वोक्तः गौडोप्युक्तः अथ
गंभीररागः पद्मान्वितो दंडधरो [illegible] तालीमालालिकंठे मुक्ताररचिताचकं
ठे क्रीडान्वितो गायति गौरदेहः गंभीररागो मकराधिरूढः ॥ अथ शंकः।
अथ गुणसागरः पद्मायुधः कुंडलवान् पवित्रः मुक्तांवरः सत्त्वि
गुणप्रवीणः रत्नाकरे खेलति चित्ररूपः सार्द्धं [illegible] द्विगुणसागरो यमू
अथ [illegible] विहगरागः पूर्वोक्तः कल्याणरागोपि पूर्वोक्तः अथ
[illegible] कुंभरागः धवलवसनधारी गौरदेहः किरीटी कनककलश
युक्तश्चामरैर्वीज्यमानः मलयजदलदूर्वा पीतपुष्पान्विता
र्चेः सहचरिरमिणीभिर्गीयते कुंभरागः ॥ अथ शिक्षः ॥ अथ पु
गंडरागः [illegible] नलोचनो सितांबरो हि कुंडली भुजंगवल्लिर्चि

१

अथध्रुवकः सुवर्णकिंकणान्वितः प्रवीणमित्रसंयुतो निरंतरं प्रियंवचो जगादनो
मगुंजकः सुरागरंजकः प्रभुः ॥ अथ धमैयरागपुत्रध्यानम् ॥ नटरागः पूर्वोक्तः
कानडापि पूर्वोक्तः सारंगकेदारौ पूर्वोक्तौ ॥ गुणरागध्यानम् । धत्तेमलक
चर्मणीच मुकुलंस्फालं समाविभ्रते दृश्येयस्य विराजतेच दलजामालाहि
जंबूतरोः भालेभस्मकिरातकर्मनिपुणो ट्व्यां समं सगिरमेः शंभो
२ भक्तिपरायणो गुणकोरागाधिपो भूतले । अथ अतिष्ठः गौंडमहारः
पूर्वोक्तः अथ जलंधररागध्यानम् पयोबिंदुः सह पेनुमित्रिजजने
वंशांप्रियंवादयन् धत्तेश्यामवपुः सुपीतवसनो शैलं गुहं हेल्लया ॐ
प्रायश्चापव˅ वर्षतिघने जालंधरो नाम ध्रुवकः नटूवक्रांचलवालकोतिकुमगो
नादाप्रियोवं सदा ॥ अथ शंकररागध्यानम् ॥ धतजल

हृहवश्यों कामवा दिव्यरूपी जलजविपुलनेत्रो वक्त्रतांबूलधारी
मलयजपरिलिप्तः कंकणाढ्यः किरीटी प्रमथपद्मरगलेशेशांक
१०.ध्यां २ः सुप्रभावः इति मेपठ्न्वालिख ०

४

५

४

अथ सिंधुराग: संगीत रत्नाकर के मतसें ये राग श्रीरागका पुत्र है । इसकी हेमंत ऋतु है इसका षड्ज ग्रह स्वर है । अपराह्न समय है सप्तस्वर संपूर्ण है । ब्रह्मा ऋषि है । अग्नि देवता है । सिं बीज है । गायत्री छंद है अथ यंत्रकी विधानम्

पीलोरोगेति विख्यात रागेन विनिर्जितः सिंधुरागेति

संप्रेक्षो विख्यातो वरीह गानमिष्यते । अथेष्टसाधनम् ओं अस्य श्री सिंधुरागस्य ब्रह्मा ऋषिरग्निर्देवता गायत्री छंदः सिं बीजं स्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः अथ ध्यानम् ॥ आरूढः प्रवीरो दृढधृतकवचो रोषितो खड्गधारी दुर्गा देव्यैकभक्तो विशदपटधरो लोलताक्षो वलीयान् सिंधुरागः प्रवीरान्न हरति समरे कोपितान् भूपतीन्वै चेताहृत्कलोकनये प्रदिशतु सततं मंगलं सज्जनानां ॥ अथ मंत्रः ओं सिं सिंधवे नमः अथ देव मंत्र:

सर्व पूजनम
न

अथ अग्नयेनमः ४ इसकी ओढना नायिका हये . अर धृष्टनायिका है अरु वीररस
है लछण इनके पूर्व होचुके . अथ स्वराः षड्ज सम है ऋषभ चडा
गंधार उतरा मध्यम उतरा पंचम सम धैवत चडा निषाद उतरा ४ चडा भी लगता है
सि. अथ सरगम . निधपम गरे निस गरेस निस निसरे गरे सा
२ सममा गम पम गरे मगरे निसा ० इसकी गत . नि२ डा डिडु
डा ड्रा डा डाड्रा डा डाड्रा डा डिडु डाड्रा डाड्रा डाडा डिडु डा
ड्रा डाडिडु डाड्रा डा डिडु डाड्रा डाडिडु डाड्रा डा डा
ड्रा डा डिडु डाड्रा डाड्रा ड्रा डा ढिडु डाड्रा डाडाड्रा
डा ॥

अथ एमनाख्य कल्याणम् रत्नाकरमतानुसार येह राग श्रीरागका पुत्र हय येअ
र इसकी हिम ऋतु हये। अर सायंकाल समा हये। अर ऋषभ तीव्र इसका
ग्रहस्वर है देवता अग्नि है अर ब्रह्मा ऋषि है। गायत्री छंद है ऐं बीज है अ
र मध्या नायिका है अर दक्ष नायिक है अर शृंगार रस है अथ
ब्रजीर्ण विधि: कल्याणं तु यदा लोके पूर्वा मिश्रितं गेहल नायिके: प
मनेतिच विख्यातं सायंगातुं प्रयुज्यते। ऋषभांश ग्रहन्यासं मध्यम
स्तीव्र उच्यते। अथ प्रयोग साधनम् ॐ म स्वस्त्री एमन कल्या
णरागस्य ब्रह्मा ऋषिरग्नि देवता गायत्री छंद: ऐं बीजं मनोभिल
षितसाध्यर्थे जपे विनियोग: अथन्यास: ऐं अंगुष्ठाभ्यां नम:
इत्यादि सर्वन्यासं कुर्यात्। अथैमन राग ध्यानम्॥

२

यमनना
मविशारद
द

मुक्तारत्नसुवर्णवस्त्ररचिते सिंहासने सुस्थित: छत्राशोभितमस्तक: परि
जनै: संवी~~जित~~ज्यते चामरै: तांबूलं वदने सुगंधितवपु: कंठे च रत्नाव
ली ~~कल्याणं विशदांशुकं~~ च पलंद कल्याणदोम सुजाम्‌ ॥ सर्वपूज
नं कर्त्तव्यात्‌ अथ मध्यानायिका लक्षणम्‌ मध्यानू ~~नायिका~~ यौवना
पूरनयौवनवंत भाग सुहाग भरी सदा भावत है मनकांत द
दलदानं पूर्वोक्तम्‌ मंगारलक्षणमाधि पूर्वोक्तम्‌ अथ पाठ
क्रम: षड्ज सम: ऋषभ चड: गंधार चड: मध्यम चड:
पंचम सम: धैवत चड: निषाद चड: अथ सरिगम: रे
गमरे गम पध पम गरेसा ।२ निध निधपमगरे ध

मारू पूर्वोक्तः ॥ अथ बर्वलरागध्यानम् ॥ पुष्पैश्चंदनकैर्विरचितां मालां
गले चादधद्यामो मन्मथचापलोऽसु ललितैः स्वांगो सुचित्रांबरः लिप्तः कुंकुम
कर्दमैः सुरभितैर्हेमोद्भवे कुंडले तारुण्यं प्रमदाप्रिको दधन कंदरागोऽत्र सकैर्बर्व
लः पपरागोऽप्रसिद्धः ॥ अथ मेवाडरागध्यानम् ॥ ॐ कमलसदृश
देहः श्यामवस्त्रान्वितो यो विपुलबलसमेतः संमतो नगरूपः करतलधृतख
ड्गो प्रौढतारुण्ययुक्तः कुसुममुकुटमूर्ध्वोपालि मेवाडरागः इत्यप्य
प्रसिद्धः ॥ अथ सिंधांगरागध्यानम् ॥ सिंधांगरागो वसनं नवि
चित्रं पुष्पाणि गौरो वसनं बिभर्ति मालां च मुक्ताविरचितां सुगौरः
क्रीडत्यसौ चंपकवाटिकायां ॥ अप्रसिद्धः ॥ अथ चंद्रकारः ॥ क
रारविंदे कुसुमानि नूत्नं हारं गले सर्पलतादलानि धत्ते व

चो युक्तिसुधांचवीरोकर्पूरगौरोपमचंद्रकाशः ॥ अप्रसिद्धः ॥

ध्यानम् अथभ्रमररागध्यानम् रंभावनेचंपकवृत्तमुक्ते विनोदरूपी सुखरम्य
मानः पुष्पावलीहेमकरीटमाली विचित्रवस्त्रोभ्रमरोलिरागः अ

अथपंचमानंदरागः प्रसिद्धः ॥ रक्ताम्बरः कंचुकदंडपाणि गौरः कुमारंललितः प्रवीणः
युक्तास्वर्णकुंडलरः कमुक्तोजीपार्श्वदानंदसुरागराजा अप्रसि

१ द्धः सोमरागः पूर्वोक्तः इतिमालकौशपुत्रालि ॥ अथ
हिंदोल ४ अथमंगलरागः युक्तास्वर्णचारुशोभितगलः

४ पुत्रालि कंदर्पदेहोपमलीलारावगंभीरनिर्भरकरोचचूकारझंकारहृत्
युक्तोऽसौ र्केकिरीटमस्तकधरश्चित्रांबरः सर्वतो लोकेसर्वज
नानुरागचतुरो रागाधिपो मंगलः ॥ अप्रसिद्धः अथ

२

अथ संगीतरत्नाकरमतेन ॥ येह राग दीपकका पुत्र हे ग्रीष्मऋतु हय्ये अर प्रातःकाल हे। अर ऋषभ अतिकोमल इसका अंश हय्ये अर संपूर्ण हे अर अग्नि इसका देवता है अर ब्रह्मा ऋषि हे अर गायत्री छंद हे अर कं बीज हे अथ अकीर्ण विधिः योगिन्यां गौतिका यत्र प्रसन्नेन सुगायकैः कालिंगरेति विख्यातो प्रातः गानं प्रशस्यते ऋषभांशग्रहन्यासः सप्तस्वरसमन्वितः अत्र षडाड़ः सरेगमपधनि ॥ अथेष्टसाधनम् ॥ ओम् अस्य श्रीकालिंगररागस्य

कं बीजम् ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छंदो अग्निर्देवता वांछितार्थ प्राप्तये जपे विनियोगः अथ ध्यानम् ॥ ओं तांबूलवक्रो धृतखड्गहस्तश्चित्राम्बरः कुंकुमलिप्तभालः सुवस्त्रकोपेतकटिप्रगौरः सर्वप्रियोपालि कालिंगरागः ॥ अथ मंत्रः ओं कं कालिंगाय नमः अथ देवमंत्रः ओं अं अग्नये नमः ॥ अथ न्यासः ओं कं अंगुष्ठाभ्यां नमः

नवयौवनभूषिता

~~मुग्धा~~नवोढा नायिका. दक्षनायिक: वीररस: अथनायिकानवयौवनभूषित
लक्षणम् दोहा सोनवयौवनभूषिता मुग्धाको यह वेस वालदसातिक
सें जहां जोवनको परवेस ॥ दक्षलक्षणं पूर्वोक्तम् ॥ अथवीररसलक्ष
णम्। दोहा. है बवीर उत्साह रस गौर वेरणा दुतिअंग अतिउदार
कां: गंभीर कहि केसवरा यवसंग ॥ अथ ठाठक्रम: षड्ज. ऋषभअ
२ तिकोमल गंधारकोतीव्र: मध्यम चढा पं. स्थिर. धैवत उतरा. निष
दचढा. अथसरिगम: सस गग मम ऋऋ नित २ गगमप
निध धप मप गम पधनिससनिधपमगरेरेस. स्था. मम पप धध
निनि स निनि सस रेरेरे सनिधपमे गग रेरे सस निनि धध पपमम
गग रेरे सा इत्यंतरा.

चंद्र विंवरागध्यानम् ॥ ध्वजाधरो पंकजपत्रवस्त्रो राजीवनेत्रो धृत

पद्मवेषो पानिः नानाप्रसूनोद्भवकंठमाला रागस्वयं तिष्ठति

चंद्रविंवः ॥ अथ प्रसिद्धः ॥ अथ पष्पुंआंगः मालामल्लीपसून

पुष्प स्रजं गंधयुतां दधानः श्वेतांवरं कुंकुम रंजितं च नितं

म हत्वा स्यमयास ह्वारः पुंआंगरागः कथितो मुनी द्रैः ॥ अथ

प्रसिद्धः ॥ अथ पनंदन रागः तांम्बूल रागाकरण दंतपंक्तिः

पुंआंवर श्चंदन लिप्त देहः तालीसरागः करपीठ वाद्यो

ल्लानंद दो नंदन रागराजा ॥ अथ प्रसिद्धः ॥ अथ पविभासः पूर्वोक्तः

वसंतो पि पूर्वोक्तः ॥ अथ पवर्द्धन ध्यानम् शुक्लांबरः क्रीडति पा

रूपानां

ध्यानम्
२
२
तद्

छायात्र खड्गान्वित गौरदेह: आभूषित: कंकण कुण्डलाद्यैः राग:
शुद्ध: दम्भ्यां सहवर्द्धनोपि ॥ अथ सिंधः अथ विनोद रागध्यानम् ॥ १८

तालान्वित खड्ग कलादधान: शुभ्रांबर: कुंडल कंकने च युक्त: सदा
मुकुट शिखी सुगौर: हंसोदत मित्रयुतो विनोद: ॥ अथ सिद्ध: अथ
दीपकपुत्राणि: अथ कमलराग: पद्मासनस्योद्धत सुग्मर्क जालुब्धा
लिहंदे विशद देह: मुक्तावली कंकण धकटी मुक्तावरो यं
कमलो हि राग: ॥ अथ सिद्ध: । अथ कुसुमराग: रक्तांबरधरो
गौर: कमलासन मास्थित: कुसुम: पद्मपाणि च मित्रयुक्त: करी
वान् अथ सिद्ध: ॥ अथ रामराग: रामा हुयो हो साखियुक्त: सूर सहकीणौ

राग बिहाग

श्रीब्रह्माजीके ॥ प्रथम शब्द ब्रह्म ब्रह्म रूप जांनें उत्पत भयो वेद अपरमपार जू ॥ जांको

चरत चतुर मुख शोधकर रच्यौ पुन संसार जू ॥ पृथवी और आकाश जांके मध्य पवन

जल महा तत्व नार जू ॥ चुरासील दयोनी फिरव नाई समें व्याप आप सब में तो भिन्न

आधीन रहै हैं तनिरकार जू ॥ अथान्य तत्र ॥ तीन गुण तीन धाम तीन नाम प्रगट जांने

तीन काम भूत भविष्य वर्तमान ब्रह्म को पहारीये ॥ तीन मंत्री तीन शास्त्री तीन कर्म तीन ध

र्म इन को अधकन्यून होत कै हत हैं मंत्ना रये ॥ तीन देवती काल तीन प्रकृती तीन पुरु

ल एक माला गवसशीत औरव हार कौ तो करतार ये ॥ तीन आयु तीन रूप तीन को अ

व्यमस मूर तीन नार कसी प्रधान जहां में व्यापत भगवान भार रहत सब थी भिन्न आधीन

प्रभू निरकार ये ॥ अथ राजीजी ॥ आयो आसिन्मास तन मन हुलास के कै विलास

बहुत जामें देवी दरबार ॥ नर नार ब्रह्म कुमार पां उ पि आदे और सबार मंत्री मन धार

नी·८ नि ध प नि स नि स ग म प नि स नि ध पमगरेसा गम प

अथ यान्यच्छक्ती ॥ आदशक्तीग्नंतशक्तीमध्यशक्तीसर्वशक्तीशक्तीकोसंसार है ॥ जलशक्ती

नि रेसा नि रेस नि ध प प नि नि रेस गरे सा नि ध पमग रेस नि स ग म प

स्थलशक्तीपवनग्रौनारशक्तीसर्वविस्सहैमेंजातशक्तीकोपसार है ॥ तीनलोकचौदांम

प म प नि रेस नि ध प म ग रे सा नि सा ग रे सा नि स ग मगम ग

वनग्रौरपांचोंग्रस्थानशक्तीहीप्रधानदेखीप्रानपौनफिरसमानशक्तीकोविचार है ॥

गम प नि रेस नि रेस नि प पनि नि रेसा नि ध पनि रेसा नि धप मगरेस

सुरनरमुनीदेवशक्तीकीनेसवहींसेवब्रह्माविष्णुशिवआधीनशक्तीकोकर्त्तार है ॥ ॥ ॥

नी·८ नि ध प नि स नि स गम पमगरस नि स ग म धप मग रे स ग म

श्रीगणेशजी ॥ नित्यनित्यभजमनगिरजानन्दसोमनवांछतफललहोग्रानन्द ॥ तननसिं

प नि रेस नि रेसा नि ध प नि नि रेस नि ध प नि रेस नि ध प म गरेस नि स म म प

धूरचतुभुजरत्नमालकटव्यालगजमुखदेतसुखमालसोहेवालचंद ॥ विघनहरनत

प म प रेसरेस नि ध प म ग रे स नि स गम गरेस गम प नि रेस नि

नसरूपशिवकुंवरगुनकेभूपकाटतदारिद्रग्रौरदुखकोफंद ॥ हरनागमानलोककर्म

रेस नि ध प नि नि रेस नि ध प नि नि रेस नि ध प नि स नि ध प म गरेसा नी·८

दुंकोकरनयोगआदपूजेंएकदन्तआधीनकवीकरहेसेवरचैजवनयोछंद ॥ अथ यान्यतन

नि ध प नि स नि स गम प मगरे स ग म प नि रेस नि ध पम गरेस ग म प

आदमिमसोश्रीगणेशगिरजानन्दसुतमहेशकाटतेकलेशजोनेसवहीनरनारके ॥ गणेश

नि रेस नि रेस नि ध प नि नि रेस नि ध प प म ग रे स नि स म प प

जगजवदनविघनहरनसुखसदनदुखदारिद्रदूरकरनसवहीसंसारके ॥ एकदन्तरिद्धीकंत

म प नि रेस नि ग नि प नि नि नि

मुक्तमालशोभितजांकोसेवेंसिद्धसंतप्यारेकरतारके ॥ परसूकमलग्रंकुशधरदन्तसोहे ल

पम स नि स ग म गरेस रेस रेस

ना॰ ४

रागविहागजी ॥ मेरीपरनांगोविंदश्यामसुंदररमाकंतगरूडकेतपीतपटधारीहों ॥
जाकेसिरमोरमुकुटकर्णकुंडलविशुरीअलकभालतिलकभमाधनुषनीदभरी
आंखपलककोटरिपुवारवारेहों ॥ वनमालकुंभकंठगवाकपोनसोहेमगुपदउर
विराजेधरपांतिरूपश्रुतिअनूपमभक्तनहितकारीहों ॥ शंखचक्रगदापदमवेगमारें
असुरअधमदरसनतेपुनविरख्यातगब्रघसवहीभागजातेश्रीसाधीनकेभ्रमहगिरवरधा
रीहों ॥ अथान्यदिष्ठ ॥ इतश्याममुखवुलाकराजतउतगोरमुखवेसरसोहेइतके
सरतिलकभालउतमागमोतियनकी ॥ इतमोरपखसीसफूलचंद्रकाउतचंपके
लीवनमालइतवांसरीमोहेउतछुवतालतलीयनकी ॥ इतपीनपटकरउतनील
घटसजतइतवुविषुरीअलकउतशोभावेनीऔरदोनागिनकी ॥ इतकटईघुंगरी
उतघुघटइतपंगकीपाइलसरंगज्ञुनेरउतझांझरकीघुंगरुघुनेरश्रीसाधीनदेखो
सुंदरजोडीराधामोहनकी ॥ अथाशिवस्य ॥ चरोसरखीकेसोनजापैंशिवकदेव

उमगवरोगमतीसमाणचंद्रकंउमालगलैघोर घोरपीकेमंगमनवांछितफलदे ॥ ग्रर्क
पुष्पधूपदीपपान फूलाचीग्गोरथनराग्वेलपगासागरंगादनगनवहोतप्यारेमोलेके ॥
हरनरमुनीदेवकरतरैंगेनवहांकीसेवमीलकंठव्यालमयेगावखशतसवहोकोदू
धनकरैंनेहरमेहादेवमागतग्गाधीनये ॥ ग्र धन्यसुछिवस्य ॥ हंउमोलव्यालम
भालचंद्रतीनलोचनमस्मग्गंगधारी ॥ जटाजूटसीसगंगपारवतीशक्तिसंगकर
त्रिसूलडमरुलीनोधूवमकीसवारी ॥ गणपतवीरमद्रस्वर्मकर्तकीर्तमुखगोर
ताप्परराजतशिवकेगणकुवेरमंजारी ॥ मुनीगुनीगंधर्वसिद्धसाधग्गौरविष्णुकर्त
रेहतवांकीसेवानेसेतेहतग्गाधीनपूजितनरनारी ॥ श्रीसूर्यस्य ॥ ग्र राजसुम
सुखदैनकोंप्रगटभयेसवहींसंसारमेंसुरजादिनकरदीनदुखहर्नहार ॥ १ ॥
प्रभाछायाशक्तीसाथवालखिलकेनाथतुर्गरथचढकेग्गायेदूरकर्नग्रंध
कार ॥ ज्ञानीध्यानीसाधूसंतजपीतपीग्गोरमेंहतहेमनलागरमाकंतवाहको

रागविहागर

राग विहाग

स्थ: जागे बालवृद्ध कुमार अरुणोदय वेग देखवे मैं दिया सकृपाल मर्म है को मेटन हा
र आधीन पूजें बारबार ॥ अथ अन्तरा स्हः ॥ वेग उठ रे मन हरि लोचन पाप विमोचन
3 पूज मन वाणी और ध्यान सों ॥ जाके सिमरत सुरनर मुनी पार भये तुरत ही मिल गयो
ज्ञाये परम ब्रह्म भगवान सों ॥ पाप अज्ञान तिमर सब दूर है उदत होत पुन्य धर्म और
प्रीत करें ज्ञान सों ॥ तीन सप्त नव और चार दें शाहू विख्यात पूजें सब पर मात आधी
न के ब्रह्म सह रजपर धान में ॥ अथ आवतार ॥ ब्रह्म तेरी माया याव ने कौन जों न जैं न कामु
कीये तैं ने वेद हतन के हजो मकत मान सकौं न कमीन ॥ धर अवतार वेग आये भक्तन की
करी सहाय असुरन के सताने तें भय जब अति ही दीन ॥ तीन कछ बारा हे नरसिंह बा
मन परसुराम राम कृष्ण बौद्ध रूप निहकलंक दीने सुख दुख छीन ॥ विभीषण प्रह्लाद
करत रैहत याद तो हे द्रौपदी की सन कर दोदही नो दह सहीगज आये दे सत आधीन ॥ १२ ॥

रागनीकेदारे।

ता॰ ४ नि ध प नि सा ग म म ग रे सा नि सा ग म प नि ध नि प म ग रे सा सा प म

अथ ध्रु॰ जी॰ कल्प काल जागि त्यागि सकल विकल मनन रंग अंग शोध रोध प्राण बोध रस

प ग रे सा नि प नि रे सा रे रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग रे सा

नत ज्ञानी ॥ स्था॰ ॥ नियम यम सु आसन दृढ प्राणायमन प्रतिस्हर्ण ध्यान युक्त धारणादि

सा प म प ग रे सा नि सा ग प प म प नि ध नि प म ग रे सा सा

सहसमाधि ठानी ॥ अं॰ ॥ इक अलक्ष रूप रहे सुव है जगत प्रलय जबी सत्य नित्य शुद्ध बुद्ध ते

प म प ग रे सा म प नि रे सा रे रे सा नि रे सा ग रे म रे ग रे सा नि प म ग रे सा सा प

उण अन मानी ॥ ध्यानी जब येहि कला विकल जगत लीन भयो बालतिधी एक यव अति हि

म प ग रे सा ता॰ ४ नि ध प नि सा ग म ग रे सा नि सा ग म प नि ध नि प म म म ग रे — सा

सुखद जानी ॥ अथान्यत् ध्रु॰ ॥ योगिं प्राप्य योगिराज नाम योग युक्त रहें कहें सदा अलख अलख

सा प म प ग रे सा म प नि रे सा रे रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग रे सा

कर्म योग धारें ॥ स्था॰ ॥ धोति नेति वस्ति अपर त्राटिक पुन नौलि कादि गो धि भाति येहि षटक

सा प म प ग रे सा नि सा ग म प म प नि ध नि प म ग रे सा सा प म

कर्म योग सारें ॥ अं॰ ॥ धारें पुन परम जोत सोइ ओक संत जनन नमन करें बालतिधी बुद्धि मम

प ग रे सा म प नि रे सा रे रे सा नि रे सा रे ग म ग रे सा नि प म ग सा सा प म प ग रे सा

सुधारें ॥ निज मारग ज्ञान ध्यान करत एकाकर परं ब्रम्ह परम धाम रूप भयेलहे सुख अपारें ॥

राग· केदारी

ता·८ नि सा ग म प म ग रे सा नि सा ग म प निधनिपम ग म ग रे सा सा प म प

अथ शान्तिके ॥ विभु माया अति हिं प्रवल निवल देव पुंज करै हरै बुद्धि शुद्धि सकल विकल कर

ग रे सा ग प नि रेसा रे रे सा नि रे सा निध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा

ण तारी ॥ स्था· ॥ परमेष्ठी वत्स हरे इंद्र मेघ वर्षक रे जस मति शिशु वंध कयो धयो उवलमारी· अं·

नि सा ग म प म प नि प नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प

दु वी सा अंगति धार दर्शन हित व्रज गहि गयो यमुना तट प्रकट वाल केलि कला धारी ॥ पंकलि यो

नि रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग रे सा सा प म प ग रे सा नि सा ग म प

चक्र के शानंद तनय नाहि दृश विह सआइ गोद मधाक रूप ऊरधैं कारी ॥ मुख प्रविश्य प्रलय दू

म प नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प नि रे सा नि रे सा

खि जनन मर ण देख देव अत्यद्भुत भ्रमित न फिरयो परम भीति चारी ॥ ऐसी परमेश्वरि के चरणकं

नि ध नि प म ग सा सा प म प ग रे सा ता·८ नि सा ग म प म ग रे सा

जं मंजु वाल माल धारत मन वकै जगत मोह वारी ॥ अथान्य च्छन्तो· ॥ जंगत कारण सार धार

नि सा ग म प नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प नि

चित्र कार्य करि गिरा मदिरा हरि गिरा धरि गिरा धरि गिरा विश्वरूप चरणी ॥ स्था· ॥ नाना विध रूप

रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा नि सा ग म प

रंग मिन्न ढंग जीव विविध कर्म कै अममति युत देसि मूलिक रणी ॥ अं· ॥ पुरुष मूलि सरत

प प म प नि प नि प म गम ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प नि रे सा

रहे जब लग जग अंत होई नव लग हौ वामन के शासन मनु हुं सरणी ॥ परम प्रवल शान्ति मन्ति

[illegible]

केदारि. राग.

ता. ४

नि सा ग म प म ग रे सा नि सा ग म प नि ध नि प म ग म सा प म
अथ श्री गणेश राजो ॥ ताल ४ ॥ ढुंढि राज गुंडि शुंड मुख मछ चारें वारें विघन पुंज रद ए
प ग रे सा ग म प नि रे सा रे रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग म प म ग रे सा
क धारें ॥ स्था. ॥ भाल तिलक माल गल ललित सोहै मोहै मुनिन मन सन्मान कारें ॥ अं. ॥
नि सा ग म प म प नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म ग रे सा ग म प नि रे सा
चतु हस्त अति मस्त शुभ गात मृदु मात तात गिरजा हाथ गरे हार सारें ॥ प्रियतात उरला
नि रे सा नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा नि सा ग
त मुदित वदन नीके जीके कामदी जो वाल निध सदा चारें ॥ अथान्यत गणेश ॥ दति नी
म प प म प नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प नि
के शुचि भात दुंदु मेघ मध भानु किरण प्रकट कारि शुभ शुंडि धारें ॥ स्था. ॥ हिमगिरि विदि
रे सा नि रे सा नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा नि सा ग म प प
तन या सुतन योजु भयो जग तै जग विघन भग्रां ब्रि सबरी उदारी ॥ अं. ॥ रुद्र सिद्ध तेज म
म प नि ध नि प म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ग म प नि रे सा रे सा नि रे सा नि ध नि प
न धारी सुधारी अरि पुंज जिमु भुंज जारी विहारी ॥ गण नाथ कहे गाथ वसंत निधं सुधि दान अ
म ग म ग रे सा सा प म प ग रे सा ता. ४ नि सा ग म प ध प म प नि ध
तमान दे हुं आज मजो पाद सारी ॥ अथ विष्णु जी ॥ पर मसांत सावन प्रभु भक्त जन तमा

राग केदा·
रे·

ग म प नि सा रे सा नि सा नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा नि

सर्वे पाप छीन होत वासन युत ओत प्रोत अचल जो न रूप हिये अवाट करण धिस्तुः ॥ अ ॥ सा

सा ग म प । म प नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा । ग म प नि रे सा

मीपक एकलोक एक रूप पुन अभेद लेन पुरुष भेद चारि ई प्सिन पद जिस्तुः ॥ दीन बंधु भक्त व

रे रे सा । नि रे सा नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा ना·० नि सा

धूल चरण कमल विमल हिये वाल नि धी ध्यान धरे दर्श हरि कारि स्तुः ॥ अ थान्य गिद्ध स्तुः ॥ मकरा

ग म प ध प । म प नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा म ग

कृत कुंडल मध सुखम शोभ मुख हिं धरे हाटक को मुकट भ्रकुटि खोर चंदन धारी ॥ स्था· ॥ पीत

प नि रे सा रे रे सा । नि रे सा नि ध नि प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा नि सा ग म प

वसन हेम रसन श्रोणि देश धारत हो भार भूमि हरण चतुर भक्त पीर हारी ॥ अं· ॥ गरुड अंस च

— प । म प नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा ग म प नि रे सा रे रे सा नि रे सा

ढ्यो जात भान मुंदिर श्याम वर्ण ध्वजा वैन नेय धारि हारि पाप सारी ॥ शंख गदा कंज चक्र वक्र वक्र

नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा ना·० नि ध । प नि सा ग म ग रे सा नि

असुर हनन करण लागि शस्त्र धरै करै कार्य्य भारी ॥ अ थ शिव स्य· ॥ अति विरूप काल रुद्र ज्व

सा ग म प नि । प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा ग म प नि रे सा रे रे सा नि

लन शिखा जटा धरै वे यति वसन नि दन करै शूल अस धारै ॥ स्था· ॥ भस्म धारि मुंड मालि भाल

रे सा नि ध नि प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा नि सा ग म प प । म प नि

नेत्र करउ जारि जारि देन विस्मृत गरि श्रो द्द हास कारै ॥ अं· ॥ दृष्टि मुख भगण भगत प्रभाजवत

रागनी केदारि

३ ३ ३ ३

ग म प नि सा रेसा । नि सा निध नि प म ग म ग रे सा । सा प म प ग रे सा ना.८

धि. शूल प्रान अंस धरे भीषण मुख वदं घूमरे धरे धीर बाल निधै अरिन उर सत फारे ॥अं॥ याहिं दि

सा निध प नि सा नि सा ग म प नि ध नि । प म ग म ग रे सा । सा प

वस्य ॥ हर गंगाधरण भरणाईंदु किरण शिखर करण सरण गत दुःख हरण चरण

म प ग रे सा । ग म प नि रेसा रेसा — नि रेसा निध नि । प म ग म ग रे सा

जात जग रे ॥स्था.॥ दशकंधर शिव मंदिर बैठ कठिन सुतप तप्यो विंशति भुज प्रबलकी

— सा प म प ग रे सा नि सा ग म प ध प । म प नि प नि प म ग म ग रे सा । सा

यो राय लंक नगरे ॥अं॥ बाणासुर शंभु भक्त सक्त देख लेखन पत जगत नाथ थापति से ब्रो

प म प ग रे सा । ग म — प नि रेसा रेरे रेसा । नि रेसा नि ध नि । प म ग म म ग रे सा । सा प म

शा हरे सगरे ॥ तोषण हित नन्त्य कीन बाणासुर अगति प्रवीण सहस भुजादीनी से हम अस

प ग रे सा

गऊ गरे ॥ अथ सूर्य्यस्य ॥ सूर्य्य शारदा धार भार हरो पाप तीन काल बंदन कर प्रात

मध्य सायंतन संध्या ॥स्था.॥ भानु तेज मन हिं धरो वरहिं सकल प्रेरक सो वुद्धि शुद्धि प्रेरक रे

हटे सकल निंद्या ॥अं॥ याहि तेज धारण तें त्राण होत जगत मांह जगायन कों अरु हरत न

नय देन वंध्या ॥ हृदय देव दर्श देष हर्ष होत बालनिधै करै बुद्धि विशद उरस चरण कंज वंद्या ॥

रागनी केदारी

अथान्यद्रुवे ॥ परम जोत दिवामणी रक्त कंज विकच वदन कुंदरद मंद हसन पीत वसन धारी ॥ स्था ॥ चारी जग सदार हें विहित प्रभा तिमर हरनि शारणागत रक्षकर रिपु धरणि देव भारी ॥ अं ॥ जो के रघ पादन की पुनि हेतुन नमध्यं दिवस ऊर घरिहिं वेद पाठ पठन पाठन को सारी ॥ नूतन निज शार्ङ्ग करी माध्यंदिनि नाम जास यजुर्वेदि वालति धीन मो पद उचारी ॥ अथावतार ॥ निराकार भक्त व छुल असुर पीर भीर देव मेघ धरै विविध भांत करै कार्य्य सगरे ॥ स्था ॥ मत्स्य रूपि माह हन्यो सत्य व्रत अब्धि तर्यो धर्यो पीठ कमठ गिरिवर रदन धर्यो जग रे ॥ अं ॥ खंभ फाडि रक्ष करी प्रहलाद बाल भक्त वामन पावन जग मारे हन्यो रमगु रे ॥ दशकंधर हनन कारि राम धनु धारि भये सुबल बुद्ध कल्कि वाल हरे भार न गरे ॥

इति केदारी ॥

अथप्रकीर्णविधिः॥ सामेरी मधुमाधवके सावंतेन विमिश्रिते वृंदावनी प्रकाशते मध्याह्ने गानमिश्रिते

ऋषभांश गृहन्यासो गयोवर्ज्यौ तयोडवा

अथ वृंदावनी सारंगः रत्नाकर के मतानुसार मेघका पुत्र है पे
अर बावरा इसकी ऋतु है अर मध्याह्न इसका समा है पे अर ओडव है पे
गंधार धैवत वर्जित है पे इसमें अर ऋषभ इसका अंश है अर अग्नि
देवता है ब्रह्मा ऋषि है गायत्री छंद है अर हं बीजम् स्वकीया नायि
का अनुकूल नायिक शृंगार रस ॥ अथ प्रसाधनम् ओम् अस्य श्री वृंदावनी
रागस्य ब्रह्मा ऋषिः अग्निर्देवता गायत्री छंदः हं बीजं वांछितार्थ प्राप्तये जपे वि
नियोगः अथन्यासः ओं हं अंगुष्ठाभ्यां नमः अथ ध्यानम् ओं रूपा
भोवाङ्ग चतुष्टयेन सहितः पीतांबर स्त्रादिगः सच्छाङ्गं विदधाति बाण सहित
शंखं च चक्रं गदां वामांगे रमनीयुतः प्रियतमः श्रीविष्णुवत् सर्वदा सा
रंगो मधवान्वितैः सुर गेहि तं स्तूयमानं सुरैः अथ मंत्रः ओं वृंदावनी
सारंगाय नमः ओं अग्नये नमः ॥ स्वकीया पूर्वोक्त नायको वि
ततांम्

पूर्वोक्तः रसलक्षणानपि पूर्वोक्तार ॥ अथ ठाठ क्रमः षड्ज सम है ऋषभ
चढ़ा गंधार वर्जित है. मध्यम उतरा. पंचम सम धैवत भी वर्जित निषाद चढ़
ा है ॥ अथ सरगमः मपानि सारे सानिपा निपम रेरे [redacted]
मम इति स्थायी पम प मपा रेरे सस निसरेमसस. अथ
गत. सितार ९

अति चातुरी तियापति मंत्र विचार ताँही को समक कहितहैं कविको विदसृंगार

अथ ठाठ क्रम: सं रें गं मं मं पं धं नि ॥ अथ सरिगम. रेगमपधनि

सांसां निधपमगरे ॥ मपधसगरेसनिपमरेसा० । गत सितार० सोमरागकी

खालीयों उठतीहै

म.सीयखानी तास तीन डिड डाडिड डा डा डा डा डा ॥ डिड डा डिड डा डा डाडा डा ॥ स्थाई ॥

डिड डाडिड डाडा डाडा डा ॥ डिड डाडिड डा डा डाडा डा ॥ डिड डाडिड डाडा

डाडा डा ॥ डिड डाडिड डाडा डाडा डा ॥ डिड डा डिड डाडा डाडा डा ॥ डिड डा डिड

डाडा डाडा डा

2

अथ शंकरा॰ कल्पद्रुमात् सार पे ह राग मे षकावृत्त है अरव षीर
सकी ऋतु है अर रात्रि द्दसका समा है अर संपूर्ण है षड्ज ग्रह
[illegible] है अर ब्रह्मा देवता है अर ब्रह्मा ही ऋषि है अर अनुष्टुप्
छंद है अर शं बीज है अथ प्रकरणविधानम् विहागमेव
केदारमुद्रया मिश्रिते यदि शंकराभ्युपलदाहैयौ रात्रौ गातुं
प्रयुज्यते षड्ज ग्रहांशन्यासकं संपूर्णं का विषाडव ईरितः अथ
हस्ताधनम् ओं अस्य श्री शंकराभरणरागस्य ब्रह्मा ऋषिरनुष्टुप् छन्दः
ब्रह्मा देवता शं बीजं मनोभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः अथ
षडङ्गन्यासः शं अंगुष्ठाभ्यां नमः अथ ध्यानम् । ओं व्याघ्रां

शंकराभरण गत मसीतखानी चलेगी पहिली सें ताल थी मात्रिताला

वरो धूम्र जटा दधानस्त्रिशूल पाणि रूपसनंगमूर्तिः गंगाधरो
ध्याननिमग्नचित्तो दिगंबरेशः शंकर मरागः ॥ पूजनं च
अथ जप मंत्र: ॐ शं शंकराभरणाय नमः अधिदेव मंत्र: ॐ
वं वल्लभाय नमः स्वकीया नायिका अनुकूल नायिक श्रां
तिरस अथ पथ गठ ग्राम: षड्ज स्वर ऋषभ उतरा
गंधार चडा मध्यम उतरा । चडो भीलगैं पंचम स्वर धैवत
उतरा निषाद चडो अथ ध्यान तालि तार. ० डिड़ दा डिड़ दा दिड़ दा दाड़ा ॥१॥
डिड़ दा डिड़ दाड़ा दा दा दा ॥२॥ ॥डिड़ दा डिड़ दा दा दा दा दा ॥३॥ ॥डिड़ दा डिड़ दा दा दा दा दा
डिड़ दा डिड़ दा दा दा दा दा ॥४॥ ॥डिड़ दा डिड़ दाड़ा दा दा दा ॥५॥ ॥डिड़ दा डिड़ दाड़ा दादा दा ॥६॥
डिड़ दा डिड़ दाड़ा दादा दा ॥७॥

श्रां १ अथ स्वर ग्राम:

अथगौडमल्हारः रत्नाकरके मतानुसार येहराग मेघकापुत्र है और वर्णआतु है
समपमधध्योद्है और संपूर्णहै मध्यमांशस्वरहै विष्णुदेवताहै विष्णुऋषि
भीहै बृहतीछंद है अ गौं बीजहै अथअकीर्ति विधानम् सौराष्ट्र मेघम
ल्हारो मिश्रितो यादृगायकैः गौंडमल्हारविख्यातो वर्षायोगान निश्चीयते म
ध्यमांशग्रहन्यासो मध्याह्नेगाननिश्चीयते - अथमंत्रजपनम् ओं अस्य
श्रीगौंडमल्हारस्य विष्णुऋषिर्बृहती छंदः विष्णुर्देवता गौं बीजं स्वार्थसिद्ध
येजपे विनियोगः अथन्यासः ओं गौं अंगुष्ठाभ्यां नमः अ
थ ध्यानम् श्यामांशः शंखजमालिकांकिततनुः पुष्पश्रियासंयुतो
रंभापत्रनिबद्धनीलवसनो विद्युच्चलेसंस्थितः काशाद्यैः
ऋषिभिर्निहितो विपने कोदंडवाणान्वितः प्रोक्तो गौंडमल्हार

विंविसृवेनम:

यं
स·
२

कः फणिभुजापतेः त्रियेस हृतः अथ मंत्रः ॐ गैं गौं ऽ महारायनमः जयसत्रा
इसकावीर २ सहेप· स्वकीयानायिका· दत्तनायकः अथ थाठः षडज
सम ऋषभ चडा गंधार चडा मध्यम उतरा पंचम सम धैवत चडा नि
षाद चडा० अथ सरगमः मम गग मपा धपा मगरे मगरे सस २
पप धसा धप मप मगरे मगरे सासा इति स्थायी० पप धध
निनिस निनिस रेरेरे स धध पप धस धप मगरे मगरे सस
अथ यमन सितार·

अथ पूर्वकालिंगड़ा की सितार की गत । डिड़ ड़ा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा
डिड़ डा डिड़ डाड़ा डाडाड़ा इति स्थायी। डिड़ डा डिड़ ड़ा
ड़ा डाड़ा ड़ा डिड़ डा डिड़ डाड़ा ड़ा डा ड़ा ॥ डिड़ डा।

अथ [illegible] आलाप:

का २

का
२

सा ग रे ग प ध प म ग रे सा नि ध नि सा रे सा ग रे ग म ग रे
नाग जनित सुत हि गोधि भान भान गोरि नान जग विघात भाल जात गिर श अभ्रातम ध्या
सा प ध नि रे सा रे रे रे सा निरे सा रे रे रे ग म रे ग म रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे ग म प ग रे
नी॥ गणनायिक सुख दायिक बुद्धि विशद करण हार धार र रहो वालनिधी निजहि
ग म ग रे सा सा ग रे ग म ग रे सा नि ध नि सा नि ध प नि सा
हृदे मानी॥ अथान्यत्गणे॥ गायिक वर दायिक नित गणनायिक ध्यान धरो हरो स
ग रे ग म प ग रे ग म ग रे सा प ध नि रे सा रे रे रे सा सा रे रे रे ग म रे ग रे रे रे सा नि ध प
कल विकल बुद्धि ऋद्धि सिद्धि पावो॥ स्था॥ जाके पग सेवन ते देवन की विपद हरी ध
ग रे रे ग म प ग रे म म ग रे सा सा ग प ध प प नि सा नि ध प
री धीर अरिन वीर भीर कीन धावो॥ अं॥ असरन गण चरण चूर दूर उदै समर पवन
ग रे ग म ग रे सा सा ग ध ध प प ध नि रे सा रे रे सा नि सा रे रे ग म रे ग रे रे सा
अल्प सुधा न एन निच यजि मुनि नाम ज्ञावो॥ ऐसे करि वदन रदन एक केजु चरण स
नि ध प ग रे ग म प ग रे ग म ग रे सा रे स रे रे रे ग म रे ग रे रे स रे नि
दन वालनिधी वास करन मन अनंद लावो॥ अथ विभ्मो॥ गाधा॥ जगत जनन विश्वर मन हु
रे प रे नि स नि ध रे प रे नि स रे ग रे रे रे ग रे म प रे ग रे रे ग म रे ग रे स रे प रे प रे नि रे स
मनन गल माल पसीधसी रवोर मलय जात मुकुट शिखर सोहे॥ स्था॥ धेन हि श्याम र
रे रे स रे स रे रे ग म ग रे रे स नि रे प रे प स ग रे रे ग रे म रे प रे ग रे रे रे ग रे म रे ग रे स
मावाम चरण धरत कज कर निमर्दन कर मोदक रत चपल चमक जो है॥ अं॥

रागन देव
गिरी

९

२स २ग २रे २ग २प २प २प २ग२रे२स निधे २स २रे २स २स २रे गमे गरे से पे

कंबु कंज गदा चक्र रूप धारि प्रासवसै नसैं सकल अघ रनदल भीमैं धीर वो हैं रा पी

२प २नि ३स ३रे ३स ३स ३ग३म ३ग ३रे ३मनि ये २प २गरेरे ३ग म २प ग२रे २ग म ग रे २स

२ त वसन मंद हसन पद्मनाभ चरण शरण बाल निधी धार रहै सकल पाप धो हैं ।।

२स २रे ग मे गरे २स नि मे नि स नि ये २प २नि २स २ग २रे २ग २स

अन्यत्र वि ।। रमा रमण भक्त भरण प्रारण गत आण करण हरण पाप विविध भां

प२ग २रे २ग मे गरे २स २प २प २नि ३स ३रे३स ३स ३स ३ग३म ३ग ३रे३स निये प

त सात्विक तनु धारी ।।स्था।। शेष शयन मयन पिता विपति हरण देवनकी कृपा

२गरेरे २ग म प ग २रे २ग म गरे स २स २ग २प ये पे २प २प नि ३स २नि ये पे २ग

सिंधु दीन बंधु रूप [illegible] त लाज भारी ।।अं।। दुर्वासा शाप कटन अंबरीष रछकर नधर

२रे२ग २स २ग२रे २स २स २ग पप पे २प २प २नि ३स ३रे ३स ३स ३रे गे [illegible] मे२ग ३रे

णि धरण रदन शिखर पत्र सकल सारी ।। प्रहलाद भरण हेम किशपु उर सु फार

३स नि य पा म मे रे २ग २प २ग २रे गे गरे से नाथ।।

दीयो बाल निधी पाद पदम षट पद रस चारी ।।अर्थ रावस्य ।। सती चरित्रं ।। सती

रे ग म ग रे स नि ये नि से नि ध प स ग रे ग म प ग रे ग म गरे स

पति हिं शंकर शिव परमेष्ठी सभा मांझ बैठे निज लोक मगन मगनापे शिर धारै ।।स्था। १

प ध नि ३स ३रे३स ३स ३ग मे ग३रे३स नि ध पा म ग रे ग म प ग रे ग म गरे स

नहां दक्ष राय आय मान धारि माणि देख उठी सभा ब्रह्म शर्व विना अपर सारै ।।अं।। २

नवहि दत्त कुपित कहो सुनि हु सकल सभा लोग योग नहीं सभा सु इन्द्र इन्द्र भस्म चारैं ॥ ३
भूतन सम नृत्य करै नरक पाल हाथ धरै ग्रहो कव सुना सती सुधा उदक गारैं ॥४॥ जा माता
वागिा मात्र नमन नहीं ममहि करी धरी लीक वेद नकी दूर करन वारैं ॥५॥ या वानी सुनहि न
दिकुपित कहो समहि सदा शंभु वैर हीन कीन वैर ग्रन्त भारैं ॥६॥ धूम पंथ कर्म सक्त परम
तत्व विमुख रहैं कहें विप्र वचन हित कूट कर्म जारैं ॥७॥ उपालंभ विप्रन सुनम्भु गुहि श्रा
पे शंभु भक्त मद्य मास पूजें नित हठ परव हु हारैं ॥८॥ सुनहि विमन धीर धार शिव रग
ये शिव सुधार मौन मान युक्त सगण वर किलास चारैं ॥९॥ संपद को मदहि धार दत्त या
ग युक्त भयो गयो सकल देव पुञ्ज वर विमान मारैं ॥१०॥ निज निज परवार धार दुंदुभि रव
धूम धाम देव सती पतिहिं कहो हे मभीत हा चारैं ॥११॥ व्योम स ए गुरु निजहिं पिता विना हू

रागनी
देवगिरी

१

|प प नि रेस रेरे रेस रेनि रेस रेग म रेग रेरे रेसनि प |प म ग रे ग म प ग रे ग म गरे सं
सुनत ईस्वर कहित भयो मे वहि जाइ विना हूत यग दुर्मद वक्ता हे वि नाहि वाणमारै ॥२३

|प प नि रेस रेरे रेस |रेम रेरेग म ग रेरे रेस|निप प म ग रे ग |प ग रे गरे सं |प

२ कुपित देव सतीगई हरहिं त्याग यागजहा देव नही वोले काउ दत्त भीतिधारै ॥२४॥ मा

प नि रेस रेरेरेस |रेस रेरेग रेम रेग रेर रेस प |प ग रे ग प |ग रे ग म गरे सं |प
न होनकौ पवती शंभुध्यान हीये कीये अग्निकुंड छालदिये सकलदेह जारै ॥२५॥ सुन

प नि रेस रेरे रेस रेनि|रेस रेरेग रेम रेग रेर रेस प |प म ग रे ग प ग|रे ग म गरे सं |प
ईस्वर जटाफटक फटकि कीयो वीरभद्र धाइ गयो क्रोधपुंज यज्ञ नाशकारै ॥२६॥ कु

प नि रेस रेरेरेम |रेस रेरेग रेम रेगरेरे रेस प |प म ग रे ग प ग|रे ग म गरे स
उन मैं मुत्रदीयो रुद्र विदेवन चूर कीयो दक्षशिर उजाइ दीयो नैहै अपर सारै ॥२७॥

|स ग प मप |प प नि रेस निप |प ग रे ग म गरे स |स ग प पप
यज्ञनाश देवलैव ज्येष्ठ आदि शंभु विनै अजशिर धर दक्ष प्राणदीये करुणसारै ॥२८

|प प प नि रेस रेरे रेस रेस|रेरे रेग रेम गरेरे रेस प प|म ग रे ग प ग|र ग म गरे सं
वंग वंग वंग वाणि वोल शंकर नुति दक्ष करी मैं प्रसन्न शंकर नव वाले निधी नारै ॥२९

देवगिरी ता० ८

अथ सूर्यस्य ॥ अति प्रचंड उमंडल रवि परम ज्योति जगत भाग्य उदय होत सकल लो

कचरण नमनकारैं ॥ स्था॥ देव असुर नाग योगि ऋषि जपी तपी अपर स्तुव हि ध्या

न हृदय जान नित हिं हृदय धारैं ॥ अं॥ तुंहिं आत्म रूप जगत चेतन हो व्यापर हौं अ

गि उदक दान करैं विविध कर्म चारैं ॥ जल तें सम अन्न होत ज्योत पचैं अचैं जीव

धरैं प्राण वाल तुहिं विश्व तेज भारैं ॥ अथान्यद्ध्रुवे ॥ गीत ताल ॥ उदय किरण वि

न दर्शन अंबु जान प्रबोधकं । मोदकरण सुमना कारण पूजित चरण शरण वि

नोदकं ॥ स्था ॥ अरुण वर्ण सुपीत वासस धारेण तम वारण कारण सुमि कर्म साध

नवर विपाक सुधारणं ॥ अं॥ चारु चारि भुजा कसंचित कमल विमल प्रचारकं ।

सप्त अश्व सदा प्रयाण कवर प्रदक्ष प्रकारकं ॥ प्राचि दक्षिण पश्चिमा शउदीचि

रागनी देवगीरी

अथ दशावतार

ता॰ ८

रे गम ग रे सा नि ध प नि सां नि ध प सा ग रे गमप ग

जगत प्रभुहिं जगत पाल जगत सकल । पूरन हो जगत विपति दूर करत नां

रे ग म ग रे सा सा प नि रे सा रे रे रे सा रे सा रे रे गम ग रे रे सा ध प ग रे ग म

नातनु धारे ॥ स्या प्रलय भीति करन हेत मत्स्य भयो धर्यो गिरि कछप होय भूमि हे

प ग रे ग मग रे सा सा ग प ध प प ध नि रे सा नि ध प ग रे गम ग रे

त सूकर वपु धारे ॥ प्र॰ ॥ प्रह्लाद भक्त के शत्रु नाशन कों नृहरि भयो वामन होदेव

सा सा ग पध प प ध नि रे सा रे रे रे सा रे सा रे रे गरे म रे ग रे रे सा ध प ग

न की आपद जग टारे ॥ राम राम मार हलो धेनुकारि हि विध हन्यो बुद्ध बु

रे ग म प ग रे ग म ग रे सा

द्धि दूर करसा बालकल्कि तारे ॥

८

पुजमालकोश

रागमारू
ता०४
धु० त्र०

म प नि ध प म ग रे सा म प ग रे म प म ग

अथ मारू ।। त्र० ।। निर्विकार परं ब्रह्म चित्स्वरूप पूर रहो आदि अंत मध्य सोइ नाना नै

रे सा म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा म प ध प

ह कोई ।। स्था० ।। इच्छा कर प्रवल काल अचल चलहिं लीला करे जैसें नट आल कृति

म ग रे सा म प नि ध प म ग रे सा ध प म रे म प नि ध

पुन हि धरे सोई ।। अं० ।। और न ही लख हिं सके कैसें कर ईश कृति सो इ अनंत सांतज

प म ग रे सा म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा म प ध प

गत माया करि वोई ।। मूलि रहे जगत जीव मीव दृश्य सत्य मान वाल निधी चरण श

म ग म ग रे सा रे सा नि ध प म प म नि रे सा नि ध प म

रण ध्यावत कर जोई ।। अथ न्यत० त्र० ।। निराकार निर्गुण विसु नाम रूप रहित प्रभु कै

ग रे म ध नि ध म ग रे सा म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म

से कोऊ जान सके जगत जन विकारी ।। स्था० ।। चरण विन सर्व सरे अकर कार्य्य।

ग रे सा म ध नि रे सा नि ध प म ग रे सा रे सा नि ध प म

सकल करै विनहि चषु सकल लखे अमल स्रव श्रवण सारी ।। अं० ।। नहि जात मात ता

प म नि रे सा नि ध प म ग रे म ध नि ध प म ग रे सा म ध नि

त गोत लोक लख सकल नेति नेति देव कहत अचरज वत धारी ।। अरवी तपी जपी

रे सा रे रे रे सा नि ध प म ग सा म ध प म ग रे सा

विविध विधि यत्न कर भूलि रहे वाल निधी वालें जिस तात कारण भारी ।।

रागमारु

ता.८

।नि ध प मग रे ।म धनि सा निध ।प म ग म
अथ शक्तीके ॥ परम शक्ति सक्ति करति ममता जग व्याप रही काम रोह मोह ज
ग ।म प मग रे सा ।म प ध नि रेसा रेरे रेसा नि ध ।प म
नति लोभ अहंकारी ॥ स्था ॥ चेतन निज मूल रूप जीव जगति, प्रकट कीयो जनन
ग रे म ।प म ग रे सा ।म ध नि रेसा रेसा रेसा नि ध पम
पुनहि मरण दुखित भ्रमित रहित मारी ॥ अं ॥ जेसें घटि येत्र कूप जगत वेलि सदा
।ग रे म प ध प——।म ग रे सा ।म प ध नि रेसा ।रेरे रेसा नि
अवश होइ संभव तकू विविध देह चारी ॥ बाल तिथी आति हि प्रबल माया मयस
ध प म ।ग रे म प धप ।म ग रे सा अथवदो ।म ध नि ध
कल जगत जान शरण धाइ परयो तेही तेही कारो ॥ अथान्यत्र श ॥ मधु कैटभ द
प मग ।रे सा रे म प ।ध नि ध प ।म ग रे सा
लनि दुख हरणि मरणि जगत जीव देवन सुख करणि धरणि धार रही काली ॥
।म ध नि रेसा ।रेरे रेसा नि ध प म ।ग रे म प
स्था ॥ निद्रा वश कमल नयन शयन कीन जगत लीन कारी कं ड मूल मकेउ
म ग ।रे सा ।म ध निरेसा रेरे रेसा नि ।ध प म ग रे ।सं रे म
त्यागी वनमाली ॥ अं ॥ मलहि सकल उमे नाग मधु कैटभ दनुज भये रहे घूम
ध प म ।प म ग रे सा ।म ध नि रेसा रेरे ।रेसा ।नि ध
घूमित जल प्रलय अब्धि चालीली ॥ चतुरानन देव पेष सकल सिंधु मद्ध
— प ।म ग रे ।म प म ।ग रे सा ।म ध नि रेसा रेरे रेसा
ए हित धाय गये भये भीत हरेहि शरण माली ॥ निद्रा वश पद्म नाम पद्म

रागमाल:

स्था.

मधुकैटभ धाइ परे लरे विष्णु जिनहि साथ हाथ चक्र धार सहस पांचबरष
बाली ।। जबहिं बुद्धि शक्ति हरी करी बानिवर है वरी असुर नये हरि बस्योमा
रों दोउ गाली ।। मारो जल भूमि विना सुनहि विष्णु झपट लपट ऊरु पर शिरै
काट मार दिये बाली ।। अथ श्री गणपतेः ।। सुप्रभात समैं रमैं श्रीगणविघ्नह
रण करण सकल सिद्ध काम जो ध्यावत ताको ।। स्था. ।। सिंधुर युत वदन जात सुप्र
सपात ऋद्धि सिद्धि चतुर्भुजा चतुर मूर्ति करी वदन वांको ।। अंत. ।। एकदंत परम
कांत पीतांबर कटि विचित्र मूर्ति पवित्र पाद पद्म भूत करण जांको ।। तांको पद
कंज मंजु मकरंद हि भृंग रूप बालनिधी धार रहो हरो पीर धांको ।। आभ्यांत ग
रोपरा ।। हाटक की मुकुट भृकुटि चंदन खोर गणप उमे श्रवण पवन देत मनु

रागमाल

म ध नि सा ग रे | सा नि ध प म ग | रे म प ध नि ध | प मग
गरो० धारैं कर परसु घात विघन ब्रनन निघन हेत देत वरहि अभयदान मान सा

रे सा | ग म प ध नि | ध प म ग रे म | प नि ध नि रें सा नि
नसारैं ॥ अं० ॥ चारैं कर कंज मुंज दंत दंड कुंदुन रिपु मंडन निज भक्त जननम

ध पमग रे सा | म ध नि रेंसा रेंग रेंरें रेंसा नि ध प म ग | रे म प ध
२ ननयमवारैं ॥ हारैं गर कुसमन नित अनित जगत तारण हित गणपत को ध्या

प म | ग म ग रे सा | म ग प ध नि ध प | म ग म प
४ न धरैं हरैं कलुष मारैं ॥ विष्णु जी के ॥ जगत सकल पालन हित सात्विक वपु हरि

ध नि रेंसा नि ध प म | ग म ग रे सा | म ध नि रेंसा रेंरेंसा नि
सुरेश भक्त निमित धाइ धाइ विपत्ति हरे सगरी ॥ स्था० ॥ कुरु पति की सभा मांझ द्रौ

ध प म ग रे | म प ध प | म ग रे सा | ग मप ध नि
पदि की लाज धरी हरी हरी करी पीर धीर धरी जगरी ॥ अं० ॥ नाम लिये जनन पाप

ध प | म गम प ध नि रेंसा नि ध प | म ग रे सा | म ध नि रेंसा रेंरें
घनय दूर कीन विष्णु मुनियन को दीन गति दासी पति अघ दी ॥ अंजामिल तास्यो

रेंसा नि ध प म ग रे म | प ध प म | ग रे सा
अघ सदन कौं उमा स्यो वाल निधी चरण शरण दीजो निज पद री ॥ अ ध्यान्से

म | प ध नि रेंसा नि | ध प म ग रे म | प ध प म ग
न विष्णु जी के ॥ विष्णु विष्णु विष्णु जपो निस दिन नर सुधर उच्चर बुद्धि वि

रागमालू:

वि.

म प नि सा निध प मंग म प ध नि ध प म ग रे ग रे सा
भव समुद्र तरण अर्थ दीनो प्लव दृढ सु छंद देह रूप परम्प्ररूप मणी ज्ञान नगरे ॥अं॥

म प ध निसा नि ध प म ग रे म प ध नि ध प म ग रे सा नि ग रे सा
सद्गुरु हैं कर्णधार प्रेरक हरि पवन सार एते उपकरण धार नतरे आत्म ठगरे ॥

म ध नि रेसा रेरे रेसा रेसा नि ध प म ग रे म प ध प म ग रे ग रे सा
बाल निधी हस लीन अमृत सरस बिना पीन कीन नहि कछु सुकर्म दिन हि गये सगरे ॥

रे म ग प ध नि रेसा नि ध प म ग रे म प म
अथ शिवस्य ॥ जग शंकर तीन नैन मैन हरण योग करण भरन चंद मंद हसन दि

ग रे सा म ध नि रेसा रेरे रेसा नि ध प म ग रे म प
व्य सत धारी ॥ स्था ॥ कारी फणि जटा धारि वृषभ चढे चले जात गण पतात गोद लि

ग रे ग रे सा रे म प ध नि ध प म ग रे म प ध प म
ये गिरजा हरि चारी ॥अं॥ शिखी चढे वर कुमार नंदि भृंगि रिटि चारु भैरव रवभूत

ग रे म ग रे सा म ध नि रेसा रेरे रेसा नि ध प म प ध प
यत योगिनि सहि कारी ॥ डिम डिम डिम जोरु वजें भृंगन रव फूल धजें वं वं वं वाणि

म ग रे सा म ध नि ध प म ग रे म प ध
मई बाल निधी भारी ॥ अथान्यत् शि ॥ हैमि पति विपति हरण वर किलास वास करैं

प म ग रे सा नि धे निसा गरे सा म ध नि रेसा रेरे रेसा नि ध प म
हरैं विविध पाप ताप ह हृति जउ ध्यावे ॥ स्था ॥ अद्रिराज तनया इक उमा नाम कहत

रागमाल॰ शि॰

स्व र स्व र स्व र
मधनि सा रे सा नि धप म ग रे म प ध पम ग रे ग रे सा
विश्वगयो वरण हेत शंकरको देव मेव अचरज हो वरण कीयो विबविमूतिलावैं ॥ २

म ध नि रे सा नि ध प म ग रे सा नि ध नि सा ग रे सा
वरकर दुज जाइ कही उमा सुनत मुदित भई नव विवाह होत भयोवर जनेत आवैं ॥ ८

मध निसा रे रे रे सा नि ध प म ग रे म प धपम ग रे ग रे सा
हद हृवभ शंभु चढे मुंडन गर मालधरैं भस्म चर्म व्याघ्र भरे डौरु डिमवजावैं ॥ ५ ॥

म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म ग रे म प ध प म ग रे सा
भूत प्रेत भूति पिशाच भैरव गण योगिनी के विविध भांत वाद्यवजैं सजैं जनउरावैं ॥ ६

म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म ग रे रे म प धपम ग रे
वरहिं देष नारि विकल सक[illegible] ल सुभग रूप उमा विदित भाव वाल रूप सकल

ग रे सा म ध नि रे सा रे रे रे सा नि ध प म म रे म प ध प म
जनिदिखावैं ॥ ७ ॥ मंगल युत कर विहू शंभु उमा युक्त भये वरगृह स्य चादि योगिवा

ग रे सा म प ध नि धप म ग रे सा ध प म ग
लनिधी भावैं ॥ अथ सूर्यस्य॰ ॥ उग्र रश्मि सूर्य देव सेवन कर प्रति हिं दिवस दिव

रे सा नि ध नि सा म ग रे सा म ध नि रे सा रे म रे ग रे रे रे सा नि ध
सनाथ माधनतें सकल सिद्धि होई ॥ स्या॰ ॥ सोइ आत्म तंत्र मंत्र निसको नित सेवन

प म ग रे सा म ग रे सा म प धनि ध प म ग रे सा धप म ग रे
तें शत्रुन गण चूर धूर दूर दूर होई ॥ रवं ॥ अरुण वर्ण पीत वसन कुसुम नगलमालप

ग रे सा ध प म ग रे सा
हरो सकल पाप ताप विविध भांत वोई ॥

मा॰राग

सूर्य॰

४

नि ध प म ग रे सा ध प म ग रे सा ध नि सा म ग रे
सकल जगत तारण हित उदयाचल उदय कारि धारि ज्योति कर्म सकल विश्व
सा सा ध नि रे सा रे रे रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे सा म ग
साधैं ॥स्था॰॥ प्रकट रूप ईश्वर रवि कवि यन कों बुद्धि देत लेत तेज धरै हरैत
—रे सा नि ध प म ग रे सा ध प म ग रे सा ध नि सा ध प
मअ्रराधैं ॥अं॰॥ अरुण कुसुम चंदन पुन अ्रतत सुम बढि जात भात हिये अर्घ जा
—म ग रे सा म— ध नि सा रे रे रे ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे
त हटैं ~~सब~~ तुअ्र पराधैं ॥ बालनिधी दयानिधे चरण शरण धार रहो जउ ता तम ना
सा ध प म ग म ग रे सा सा म ग म प ध नि ध प म
शन हित अहित निधन राधैं ॥ अ्रपद शाव तार॰॥ सकल जगत प्रभव विभु हनु वि
ग रे सा नि प नि सा म प ध प म ग रे सा सा ध नि रे सा नि ध
धर्म कर्म कोउ रछन हित अहित दनुज नाशन अवतारी॰॥स्था॰॥ अंउ जान आधि मा
—प म ग रे सा सा नि प नि सा म ग रे सा म ध नि सा नि
न सत्य व्रत तारन हित कमठ रूप धार सुधा देवन मुख धारी॥अं॰॥ सूकर गात सूकर
ध प म ग रे सा नि प नि सा म प म ग रे सा म ध नि रे सा नि ध प
जग विगत पाप करे हरे विविध दुःख नर हरि हो प्रहलाद तारी॰॥ वामन पद पावन जगप
—म ग रे सा नि प नि सा म ग रे सा म ध नि सा नि ध प म ग
रसुराम भार हरण रामचंद्र सेतु करण सान हलो भारी॥ बुद्ध बुद्धि मोह करी कपट रूप धार हरि
नि ध नि सा म ग रे सा
विविध भांत बाल कृपा चारी॰॥

अथविहागराग: रत्नाकरकेमतानुसारश्रीरागकापुत्रहये · अर हिम ऋतुमेंगा
नायेजपहे अर्द्धरात्रीथींवाद इसकासमाहये अर निषाद इसकाअंशादि
स्वरहये ऋषभधैवतइसकेनिर्वलहैं इसकाब्रह्माऋषिहये अर ब्रह्मा
हीदेवभीहै और जगतीछंद हये विं वीजहै अथपत्रकीर्णविधि:
संकरास्थेयदागत्से तिलंगेनविमिश्रित: विहागइतिविख्यातोनिशीथे
गानमिष्यते निषादांशग्रहन्यासोनिर्वलौच रिधौस्वरौ अथेष्टसाधनम्
ॐमस्यश्रीविहागरागस्यब्रह्माऋषिब्रह्मादेवताजगतीछंद: विं वीजं स्वार्थ
सिद्ध्यर्थेजपेविनियोग: अथध्यानम् गौर: श्वेतपटान्वित: करतले
तांबूलजावीटिका कामाति: सखिभि: समं सुरभिभिर्गंधैर्युत: सुंदर: को
के कामुक काम केलिकृतक भाय: सदाकोविदो रागोयं सविहागमूर्त्ति
सुभग: गेयोनिशीथेवुधै: पूजनंकुर्यात् · अथमंत्र: ॐविंविं

गणायनमः अथदेवमंत्रः ॐब्रंब्रह्मणेनमः जपसंख्या नवोदा मितारि

कानापिका इसकादत्त नायिकहै शृंगाररसहै अथक्रमः षडज सम ऋषभ

पंचमसमह चडानिर्बल गंधार चडा मध्यम दोनो धैवत चडानिर्बलहै नि

षाद चडा अथसरिगमः गगमम पा निधपम गग मगा मसो नि

वि धे निनिसे मगा मगा सस नि २ स्था अथांतरा पप धनि ससनि

२ निसस सग मगा मगा सस निनिधा मगा मगा सस नि

अथगतसितार ॥ डिड डा डिड डाड़ा डाडाड़ा डिड डा

डिड डाड़ा डाडाड़ा डिड डा डिड डाड़ा डाडाड़ा

डिड डा डिड डाड़ा डाडाड़ा ॥ अथालापः

प्रथमयामदिव०

ललित भैरवकापुत्र०

के॰ २

अथ केदारी रागिनी प्रारंभः यह रागिनी तानसेन को मत प्रकार में दीपक की स्त्री है और
संपूर्ण है॰ षाडव भी है भरतमत में धैवत वर्जित करा है संप्रदाय गणीजनो के बीच
ऋषभ कमल गाते हैं अंशन्यासादि मध्यमस्वर है समय अर्द्धरात्री कथन करी है
ऋतु ग्रीष्म है श्लोक मध्यमांशग्रहन्यासा धैवतस्वरवर्जिता अर्द्धरात्रौ तु रे गानं
केदार्य्यः क्रियते बुधैः अथास्याः प्रकीर्णविधिः विहागशंकरो यत्र श्यामस्वर
विमिश्रितम् केदारी जायते तत्र शांतिरसे प्रयुज्यते अर्थः जब विहाग शंकरा
श्याम कल्याण तीनो मिले तो केदारी होती है॰ इसका शांतिरस है और मध्यानायिका है और अनुकूल नायक है कें बीज है विष्णु ऋषि विष्णु देवता है बृहती
छंद है अथ प्रसाधनम् ॐ मस्य श्री केदारी रागिनी मंत्रस्य विष्णु ऋषि बृहती छंदः विष्णुर्देवता कें बीजं यथोक्तफलप्राप्त्यर्थे जपविनियोगः अथ न्यासः
ॐ कें अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि अथ मंत्रः ॐ कें केदार्य्यै नमः विष्णुमंत्रः पूर्वोक्तः

रागि· नाटि·

ता·४ ध प म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे प ध प म ग

अथ शिव स्य·॥ ता· दादरा॥ सदाशिवं शिवायुतं नमामि काम साधकं जटाधरां धकांतकं प्र

रे ग म म ग रे सा ध प धनि सा रे ग रे रे सा नि ध प म ग ग रे प ध प म ग

तांत भंजनं भजे ॥ स्था॥ विभूति देह धारकं गले हि रुंड मालकं हि मां सु सुम्र मालकं गरो

रे ग म ग रे सा ध प म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे प ध प म ग म

श पालकं यजे ॥ अं॥ त्रिसूल दंड मंडितं नितांबु गंग शेषरं सु योग मेव चारकं सुराम पाद

ग रे सा ध प धनि सा ग रे सा नि ध प म ग रे प ध प म ग रे म ग रे सा

कां बुजे ॥ सु सेवनं सदा मुदान मामि भक्त पालिनं सु क्रन्ति वास संचिते शुभ्रिजि हृ धारे रा भजे·॥

ता· ४ धनि सा रे प ध प म ग रे ध प म ग रे सा ध

अथान्य शिवस्य·॥ ता· रूपका॥ निरत करत तांडव शिव परम मोद कारी धारी शिर गंग चं

– प म ग रे सा म प ध नि रे सा रे ग रे – रे सा नि ध प म ग रे ध प धनि ध

द अग्र भुजंग मारी ॥ स्था·॥ हाव भाव विविध भांत गत हिं लेत नीकि नीकि थेत न्ना थे थेतन

प म ग रे सा धनि सा रे प ध प म ग रे सा ध प म ग रे सा म

त महिं विषम धारी ॥ अं॥ डमरू की डमक साध राधकी यो नाद सकल विकल ताप हारी जग

ग रे सा म प ध नि सा ग रे रे रे सा नि ध प म ग रे ध प म ग रे सा म म रे सा

परम मोद कारी·॥ पर से उपकारी के चरण कमल वाला नि धी विधि पूर्वक नमन करै धरै धीर सारो·॥

राग·नाटि· ता· ३ पद· ती· २ ग म म प प प म ग रे सा म ग म ध नि सां रें सां नि ध प

अथश्रीसूर्यस्य·॥ताल·शूल॥सूरजया जगतकलवजाई· जिहविनजीवजगतमेंसगरेरैन

म ग रे म ग रे सा म ग म ध नि सां रें रें रें सां नि ध प म ग रे सा

शयनजउतातमछांई·॥स्था·॥यह्यपि जागिरहे कउ पुरुषानादिविषयविषधरपसुताई·

३ म ग म ध नि रें सां रें रें रें सां नि ध प म ग रे सा म ग म ध नि रें सां रें रें सां नि ध

रविप्रतापजगहोयप्रकट जव त्यागमंदमतिहरिपदगाई· तमसुमधर्मकरमकरनीके

३ ध प ग म ग रे सा म ग म ध नि रें सां रें रें रें सां नि ध म प ग म ग रे सा

प्रकट देवकोदर्शनपाई· वालनिधीरविपादनमनकरे धरे धीर मनअजिहर्षाई·॥अथन्यद्रवे·

ध प रे ग म प ध प म म रे सा ध ग रे सा म ध

तीनताल॥२॥अरुण वर्ण अति सुंदर भानुपरमप्रकाशपुंजजगतगरे·॥स्था२॥योजन

नि रें सां ग रें रें रें सां नि ध प म ग रे प ध म प ग रे सा ध ग म ग रे सा

लक्षदूरभूमीतेंवसेलोकहितकारीरे किरणलेतजलक्रमतेंविधरोदेतलक्षगुणवारिदजगरे·॥२

धप म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे प ध प म ग रे सा ध ग रे सा

२ नरनारीसमजीवजंतुपशुमोदधरैंसुखसारीरे प्राणरूपजलवर्षोजगमेंअन्नादिकहोहेंवननगरे·॥२

सा म ध नि रें ग रें रें रें सां नि ध प म ग रे प ध प म ग रे सा ध सा रे प ध

दया ऐसोपरमें[illegible]गुणसागरआत्मरूपजगव्यापोरे चरणशरणइकवालनिधीद्विजदीजोदा

- प म ग रे सा

नदयानिजमगरे·४॥

रागि·नाटि·   ता·८

रे प ध प म ग रे ध प म ग रे सा नि ध

अथ दशावतार·॥ श्रा फरि रूप धारि परे मनुशं जलिमां जव हीनावतारि प्रलयअब्धि

नि सा रे सा म प ध नि रे सा रे रे ग रे रे सा नि ध प म ग रे ग

मकर छकारी ॥ स्था·॥ कमठ सुमथ शिरिवरि धस्यो जगति वंध कोउ हस्यो फोउ षंभ

रेस नि ध नि सा रे सा रे प ध प म ग रे सा प म ग रे सा नि

नहरि हन्यो हेमक्कि शिपु मारी ॥ अं·॥ वामन जग पावन महन बलिर नगंग भूमि सरीधर

ध नि सा रे प ध प म ग रे सा म प ध नि रे सा रे रे ग रे रे सा नि ध प म ग

हिं पर सुमार हस्यो राम सेतु चारी ॥ सेना गण साथ लिये रावण के सीस छियें हेवल वुद्ध

रे ग रे सा नि ध नि सा रे सा

वाल निधी कल्कि मार हारी ॥